मंत्र-तंत्र-यंत्र
वि
ज्ञा
न

निखिलेश्वर जन्मोत्सव १६६२

१९, २०, २१ अप्रैल १९९२

निखिल धाम

शेठ पी०टी० आर्ट्स एण्ड साइन्स कालेज

गोधरा (जिला-पंचमहल) ३८९००१

गुजरात

शिव लक्ष्मी साबर साधना पर्व—महारुद्र यज्ञ

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।

गुरु जन्मोत्सव महान दिवस है, समर्पण का दिवस है, सद्गुरुदेव ही शिष्य के जीवन का अन्धकार दूर कर अपनी ज्ञान शलाका से सौभाग्य का प्रकाश भर सकते हैं, गुरु तो साक्षात् ब्रह्मा विष्णु, महेश के स्वरूप हैं ।

इस बार २१ अप्रैल **गुरु जन्मोत्सव** गुजरात की पावन भूमि पर गोधरा में आयोजित किया जा रहा है, यह केवल गोधरा का सौभाग्य नहीं, अपितु पूरे गुजरात का सौभाग्य है, इस पावन भूमि पर गुरुदेव के साथ तीन दिन रह कर अपने समर्पण भाव को प्रकट करने का ।

इन तीन दिनों में १६, २०, २१ अप्रैल को विशेष आयोजन होंगे, क्योंकि जहां गुरुदेव हैं, वहां शिव का साक्षात् स्वरूप है, और लक्ष्मी का आगमन है ।

इस महोत्सव में साधक शिव भाव से ऐसी विशेष साबर साधनाएं सम्पन्न करेंगे जिससे उन्हें साक्षात् शिव और लक्ष्मी की अनुभूति हो सकेगी, एक जीवन का नया अध्याय प्रारम्भ होगा ।

वर्ष–१२

अंक–३

मार्च-१९९२

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

नमो शान्त रूपं ब्रह्म रुद्र महेशं।
निखिल रूप नित्यं शिवोऽहं शिवोऽहं ।।

हे स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी ! हे गुरुदेव !! आप शान्त स्वरूप हैं, ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र के साक्षात् साकार चिन्तन हैं, आप का मोहक रूप नित्य मेरे हृदय में बसा रहे, मैं आपको पूर्णतः शिव-स्वरूप ही मानता हूं।

खिलने दो

मन के वासंती वसंत को

हम भीड़ में निरन्तर बढ़ते चले जा रहे हैं, परन्तु भीड़ का यह प्रवाह अपने आपमें एक सूनापन है, भीड़ का यह रेला अपने आपमें अंधियारा है, जिसमें कोई चेतना, कोई दृष्टि प्राप्त नहीं होती, हमें यह भी पता नहीं है कि इस भीड़ के रेले में किधर जा रहे हैं, क्यों जा रहे हैं, हमारा गन्तव्य कहां है ?

जब से बालक पैदा होता है, तभी से वह भीड़ का एक हिस्सा बन जाता है, और मृत्यु तक वह इस भीड़ में ही अपने आपको विलीन रखता है, बहुत ही कम ऐसे व्यक्ति पैदा होते हैं जो भीड़ में पैदा होने पर भी अपनी अलग पहिचान बना लेते हैं, अपना अलग व्यक्तित्व विकसित कर लेते हैं, उनका कद आम मनुष्य से एक फीट ऊपर होता है, जिससे कि भीड़ उस व्यक्तित्व को आसानी से देख सके, कि भीड़ का हिस्सा बनने में गौरव नहीं है, गौरव तो इस बात में है कि हम अपने आपको अलग कैसे कर सकते हैं।

और ऐसे ही व्यक्तित्व गुरुदेव हैं, जिन्होंने हर बार एक बात कही है कि अपने आपको भीड़ का हिस्सा मत बनने दो, जो कुछ करो नये तरीके से करो, नये संदर्भ में करो, साधना के क्षेत्र में भी उन ऊंचाइयों को छूने का साहस करो जिनका स्पर्श करना भी कठिन लगता है, मनुष्य नियन्त्रित करना कोई बड़ी बात नहीं है, बड़ी बात तो यह है कि तुम जमीन में पड़े रह कर फलक को छूने का साहस कर सको और आकाश को झुका सको।

अपने शिष्यों के प्रति उनकी यही तो दीवानगी है, यही चेष्टा है, उनका सारा प्रयत्न इसी बात में है, कि मेरे रहते रहते ये शिष्य, ये साधक जमीन पर ही पड़े न रह जांय, अपितु मैं इनमें वह जोश पैदा कर सकूं कि ये आकाश को चीर कर अन्तरिक्ष के पार पहुंच सकें और ऐसा सम्भव है साधना के द्वारा, ऐसा सम्भव है श्रद्धा के द्वारा और ऐसा सम्भव है पूर्ण समर्पण के द्वारा।

और आज से पूरे मई तक का समय इसी तथ्य को क्रियान्वित करने का समय है, क्योंकि नवरात्रि जैसा पर्व पूरे शृंगार के साथ सामने आ रहा है, और इस नवरात्रि में बिजली भी है, तूफान भी है, प्रवाह भी है, वेग भी है, इस वेग को किस प्रकार से झेला जाय, इस तूफान को किस तरीके से अपनी बांहों में समेटा जाय, इसी की तो क्रिया पद्धति गुरुदेव समझाने वाले हैं, किस प्रकार से हवा में से बिजली को खींच कर अपने सीने से लगाया जा सकता है, इसी तथ्य को तो वे समझाने वाले हैं, और जो हिम्मत करने वाले व्यक्तित्व हैं, जिनमें कर गुजरने की क्षमता है, जो चुनौतियों से जूझने की शक्ति रखते हैं, वे इस अवसर की ताक में रहते हैं, घर में भीड़ का हिस्सा बन कर पड़े रहना तो मुर्दापन है, बेहोशी है, जरूरत तो

जानने की है, भीड़ से ऊपर उठ कर कुछ कर गुजरने की है, और यह दिखा देने की है, कि हम अपनी मुट्ठी में तूफान भी रखते हैं, और देवताओं को वश में करना जानते हैं, फिर भले ही वे भैरव हों, बगलामुखी हो, भगवती जगदम्बा हो।

और फिर आ रहा है, २१ अप्रैल पूज्य गुरुदेव का जन्म दिवस, जो अपने आपमें चेतना की तरंगों से ओत प्रोत है, यह एक ऐसा पर्व है जिसे दीवानों ने "गुरु पर्व" के नाम से सम्बोधित कर रखा है, भागे चले आ रहे हैं दूर-दूर से केवल इस उम्मीद में कि हम जल्दी से जल्दी अपने आपको मिला दें पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व में, और उनका स्पर्श भी इतना महत्वपूर्ण हो जयेगा कि अपने आपमें ही उनका कद कई फीट ऊपर उठ जायेगा।

२१ अप्रैल तो साधकों के लिए दीवानगी का दिन है और दीवानों की दुनियां का यह निमन्त्रण उन्हें स्वीकार रहता है, इन्तजार रहता है, इस दिन का, एक-एक दिन प्रतीक्षा में दिन गुजारते हैं कि कब यह गुरु दिवस आये और हुमस कर हुलस कर उनके चरणों में जा पहुंचें, और हम दीवाने भी इन दीवानों का इन्तजार करते ही रहते हैं, पलक पावड़े बिछा कर गले से मिलने के लिए, भुजाओं में समेटने के लिए।

यह जन्म दिवस केवल मात्र जन्म दिवस ही नहीं है अपितु अपने हृदय के अरमानों को पूर्णता देने का दिन है जो मुरझाया हुआ दिल है उसको खिलाने का पर्व है, निराशा के बीच हंसने का, गुलाब विकसित करने का पर्व है, यह केवल छोटा सा दिन ही नहीं अपितु बादल की तरह झूम कर छा जाने का दिन है और मुस्कान की बरखा में सबको भिगोने का पर्व है, क्योंकि एक अद्वितीय व्यक्तित्व के जन्म का एक पर्व है, पृथ्वी पर एक परम उत्सव का क्षण है, क्योंकि वे मनुष्य की चेतना के कमल हैं, और जब उनकी सुगन्ध से साधक आप्लावित होते हैं तो मन का वासती वसंत पूरी तरह खिल जाता है।

(परम पूज्य गुरुदेव)

इस पर्व पर **सिद्धाश्रम साधक परिवार** के दीवानों की ओर से निमन्त्रण है उन सब दीवानों को, जो दीवाने होने के लिए तत्पर हैं, और यह पर्व अत्यन्त निकट है, २१ अप्रैल, यह एक विराट महोत्सव है, जिसमें ध्यान, चेतना, साधना, कुण्डलिनी जागरण के साथ-साथ मस्ती का आलम और चेतना की पूर्णता अनुभव होती है, इस पर्व के दिनों में हवा में बिजली चमकती है तो शामें सुहागन सी हो जाती है, कोई अभागा ही होगा जो ऐसे अद्वितीय माहौल में भी भीड़ में पड़ा रह जाता है।

और हम सिद्धाश्रम के दीवाने इस पर्व की प्रतीक्षा करते रहते हैं, इसलिए कि यही एक ऐसा दिन है कि जब पूरे भारतवर्ष के साधक-साधिकाएं आते हैं, एक दूसरे से मिलते हैं, हंसना मुस्कराना, भजन, संगीत और साधना के साथ-साथ वह सब कुछ होता है जो अपने आपमें अद्वितीय ही कहा जाता है, क्योंकि हमारी इन आंखों को इन्तजार रहता ही है, हमें साधकों के आमन्त्रण का इन्तजार है ही क्योंकि उन पर हमें ऐतबार है।

जालिम के ऐतबार में लज्जत है क्या करूं ।
आंखों में इन्तजार की आदत है क्या करूं ।।

और यदि इस आदत की वजह से यदि हम पागल हैं, मिलने के लिए तड़फते हैं तो वे साधक भी इतनी ही इन्तजार में हैं, वे आकर गुरुदेव से मिल सकें, एकाकार हो सकें, और अपनी आंखों में वसन्त लहरा सकें ।

निगाहें नाज के मारों का हाल क्या होगा ।
न बच सके तो बिचारों का हाल क्या होगा ।।

हृदय के मुक्त आकाश में जीने वालों के लिए न ता कोई द्वार होता है और न दीवार, इस हृदय के अन्दर से तो कोई भी आ सकता है, क्योंकि एक बार जिनकी आंखें गुरुदेव से टकरा गई वह अलग थलग नहीं रह सकता, उसके हृदय में तो वसन्त खिलेगा ही, उसको तो आना ही पड़ेगा, मिलना ही पड़ेगा और वह सब कुछ प्राप्त करना ही पड़ेगा जो चाहे न चाहे उनके जीवन का लक्ष्य है ।

प्यार के मोड़ पर मिल गये हो अगर ।
आ गये हो तो जाने की जिद न करो ।
और जा रहे हो, तो आने का वायदा करो ।।

और फिर आ रहा है, सिद्धाश्रम का दिव्य संगीत से भरा हुआ एक योगी जिसने इस बात का निश्चय कर रखा है कि अब उस चुनौती को उठा ही लेना है जो चुनौती बार-बार उसकी आंखों के सामने कौंध जाती हैं, जब एक बार यह वायदा कर लिया कि मैं तुम्हें हर हालत में सिद्धाश्रम ले ही जाऊंगा और यह बता दूंगा कि अपने बल बूते पर भी मैं इन गृहस्थ साधकों को सिद्धाश्रम ले जा सकता हूं चाहे वे साधना करें या न करें, चाहे उन्होंने सिद्धि प्राप्त की हो या न की हो, ये सब गौण हैं, मुख्य प्रश्न तो यह है कि इनके हृदय में प्रेम का सागर लहरा रहा है, उनकी आंखों में आंसू हैं और उन आंसुओं के द्वारा जो पंक्ति लिखी जाती है, उसका भाव यही है कि आप चाहे जोधपुर रहें, या दिल्ली, जंगल में रहें या हरिद्वार के पावन तट पर, जहां भी आप रहें वहीं हम साथ हैं, और आंसुओं से भरी पंक्तियों को छोड़ कर सिद्धाश्रम जाने का कोई तुक ही नहीं है, इसीलिए तो इस बार पूज्य गुरुदेव ने घोषणा कर दी है कि मैं हर हालत में अपने शिष्यों और साधकों को सिद्धाश्रम ले जाऊंगा ही और वहां के योगियों और संन्यसियों को दिखा दूंगा कि ये गृहस्थ शिष्य भी अपने आपमें सभी दृष्टियों से पूर्ण हैं, इनको हर हालत में इस अवसर पर ले जाने के सूत्र समझाने ही हैं ।

कोई बचने का नहीं सबका पता जानती है ।
किस तरफ आग लगाना हवा जानती है ।।

पूज्य गुरुदेव ने कहा है कि वर्तमान में जो साधक हैं, जो शिष्य हैं, वे ही मेरे सपने हैं और इन्हीं के माध्यम से साधना की पूर्णता हो सकेगी, मैं इन्हें वह सब कुछ दे देना चाहता हूं जो मेरे अन्दर है, इनमें से कोई छोड़ने के योग्य नहीं हैं क्योंकि यदि इन्होंने कुछ भी छोड़ दिया तो वे कुछ न कुछ अधूरे रह जाएंगे, उनकी पूर्णता में कहीं न कहीं किसी कोने में कमी रह ही जायेगी, जो गीत मैं बनाना चाहता हूं वह खण्डित हो जायेगा, जो पंक्तियां मैं ब्रह्माण्ड को सुनाना चाहता हूं उनकी कुछ कड़ियां खो जाएंगी और मैं ऐसा चाहता नहीं हूं मैं चाहता हूं कि २१ अप्रैल के दिन इन सभी साधकों को पूर्णता दूं, क्योंकि पूर्णता में ही आनन्द है और सभी दृष्टियों से पूर्ण होना ही अपने आप में सच्चिदानन्द होना है ।

उठो ! और उमड़ कर चारों तरफ घटा की तरह छा जाओ, प्रेम साधना की दीवानगी से पूरी दुनियां को मस्त कर दो और इस बार कुछ ऐसा कर दो कि इन तीन दिनों के पर्व का प्रत्येक क्षण उत्सव हो जाये और यह उत्सव ही पूरी पृथ्वी को जीवन रस से ओत प्रोत कर सकेगा, यह रस ही पृथ्वी को एक महोत्सव से भर सकेगा, और सारा जीवन सभी दृष्टियों से सुगन्धित एवं अनोखा हो सकेगा, इसीलिए तो गुरुदेव के जन्म दिवस पर हम सभी बांहें फैलाये सब साधक दीवानों का इस दीवानों की नगरी में इन्तजार करेंगे । ●

नमो विश्व रूपाय

सर्व सिद्धि प्रदाय

श्री गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द

गुरु शिष्य का सम्बन्ध सबसे पवित्रतम दिव्य सम्बन्ध है, जहां शिष्य मन, वचन, कर्म से आराध्य गुरुदेव की आराधना कर अपने जीवन के विकार, दोषों का नाश कर सिद्धि तत्व प्राप्त करता है, प्रस्तुत आलेख पूज्य गुरुदेव के संन्यासी स्वरूप की ऐसी विशिष्ट साधना का प्रयोग है, जिसे उनके हजारों शिष्य सम्पन्न कर अपने जीवन में पूर्ण बन गये, पूज्य श्री के शिष्यों में गृहस्थ ही नहीं अपितु हजारों-हजारों साधु संन्यासी भी हैं, जो यह प्रयोग नित्य प्रति सम्पन्न कर जीवन की पीड़ाओं से मुक्त हो गये हैं, दीक्षा प्राप्त शिष्यों के लिए यह आवश्यक ही नहीं जीवन का अंग है।

परम पूज्य गुरुदेव का शिष्य होने के नाते मैं आज गुरुदेव के स्वरूपों का अध्ययन करने का दुःसाहस कर रहा हूं इस हेतु सर्वप्रथम तो मैं पूज्य श्री के चरणों का ध्यान करते हुए उनसे क्षमा प्राप्ति की प्रार्थना करते हुए अपने हृदय के विचार खोल कर सबके सामने रख रहा हूं।

दिव्य पुरुष जब इस धरा पर आते हैं, तो उनका आगमन शान्त वातावरण के साथ होता है और यह आगमन तभी होता है, जब संसार को उनकी आवश्यकता होती है, हजारों लाखों वर्षों से इतिहास में ऐसे महापुरुष साधारण रूप से जन्म लेकर साधारण वातावरण में पल कर भी अपनी दिव्य लीलाएं दिखाते हुए, एक कल्याणकारी समाज संरचना करते हुए, नवीन प्रथ का निर्माण करते हैं, पूज्य श्री ने अपने जीवन में अपनी सारी लीलाओं का अपने शिष्यों को बार-बार अनुभूति करा कर, अपने साथ लेकर मार्गदर्शन किया, उन्होंने अपने शिष्यों को प्रत्यक्ष प्रमाण सहित जीवन का स्वरूप और जीवन जीने

की कला को प्रस्तुत करने हेतु जीवन के सभी रंग में दिव्य रास रचा, शिक्षा, गृहस्थ, संन्यास जीवन, साधना, तपस्या सभी रंग तो निराले ही हैं, किस प्रकार जीवन में रहते हुए, गृहस्थ में रहते हुए, जीवन की ऊंचाइयां प्राप्त की जा सकती हैं, किस प्रकार व्यक्ति गृहस्थ होते हुए भी संन्यासी हो सकता है यह सब उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से प्रकट किया।

मैं उनका संन्यासी शिष्य अपने सभी संन्यासी भाइयों के साथ पूज्य गुरुदेव के गृहस्थ शिष्यों के सम्मुख स्वामी निखिलेश्वरानन्द साधना प्रस्तुत कर रहा हूं जिसकी रचना महातेजस्वी योगीराज महारूपा जी **ने की और हम सब शिष्य इस साधना को कर अपने जीवन में सिद्धि तत्व प्राप्त कर सके।**

विनियोग

ॐ अस्य श्री प्राणात्मन निखिलेश्वरानन्द मन्त्रस्य भगवान श्री महारूपा ऋषि गायत्री छन्द निखिलेश्वरानन्द योगीश्वर्यं, क्लीं बीजं, श्रीं शक्ति ऐं कीलकं प्रणवो ॐ व्यापकं मम समस्त क्लेश परिहारार्थं चतुर्वर्ग फल प्राप्तये सर्व सिद्धि सौभाग्य वृद्धयर्थे मन्त्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

श्री महारूपा ऋषये नमः-शिरसि।
गायत्री छन्दसे नमः–मुखे।
निखिलेश्वरानन्द ऋषिभ्यो नमः–हृदि।
क्लीं बीजाय नमः–गुह्ये।
श्रीं शक्तये नमः-नाभौ।
ऐं कीलकाय नमः–पादयोः।
ॐ व्यापकाय नमः–सर्वांगे।
मम समस्त क्लेश परिहारार्थं चतुर्वर्ग फल प्राप्तये सर्व सिद्धि सौभाग्य वृद्धयर्थं मन्त्र जपे विनियोगाय नमः-पुष्पांजली

करन्यास

ॐ ऐं श्रीं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः
प्राणात्मन	तर्जनीभ्यां स्वाहा
'निं'	मध्यमाभ्यां वषट्
सर्व सिद्धि प्रदाय	अनामिकाभ्यां हुं
निखिलेश्वरानंदाय	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्
नमः	कर-तल-कर पृष्ठाभ्यां फट्

अंगन्यास

ॐ ऐं श्रीं क्लीं	हृदयाय नमः
प्राणात्मन	शिरसे स्वाहा
'निं'	शिखायै वषट्
सर्व सिद्धि प्रदाय	कवचाय हुं
निखिलेश्वरानंदाय	नेत्र-त्रयाय वौषट
नमः	अस्त्राय फट्

मानस पूजन

१–ॐ 'लं' पृथिव्यात्मक गन्धं प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः-अनुकल्पयामि।

१ ॐ 'हं' आकाशात्मकं पुष्पं प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः–अनुकल्पयामि।

३–ॐ 'यं' वायव्यात्मकं धूपं प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः–अनुकल्पयामि।

४–ॐ 'रं' वन्ह्यात्मकं दीपं श्री प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः-अनुकल्पयामि।

५–ॐ 'वं' अमृतात्मकं नैवेद्यं श्री प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः–अनुकल्पयामि ।

६–ॐ 'शं' शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्री प्राणात्मन निखिलेश्वरानंद श्री पादुकाभ्यां नमः–अनुकल्पयामि ।

मन्त्र

।। ॐ ऐं श्रीं क्लीं प्राणात्मन 'नि' सर्व सिद्धि प्रदाय निखिलेश्वरानंदाय नमः ।।

(सवा लाख मन्त्र जप से सिद्धि)

निखिलेश्वरानंद पंच रत्न स्तवन

ॐ नमस्ते सते सर्व-लोकाश्रयाय, नमस्ते चिते विश्व-रूपात्मकाय ।
नमो द्वैत तत्वाय मुक्ति-प्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने निर्गुणाय ।।१।।
त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यम्, त्वमेकं जगत-कारण विश्व-रूपम् ।
त्वमेकं जगत् कर्तृ-पातृ-प्रहर्तृ त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ।।२।।
भयानां भयं भीषणं भीषणानाम् गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम् ।
महोच्चै पदानां नियन्तृ त्वमेकम् परेषां परं रक्षक रक्षकानाम् ।।३।।
परेशं प्रभो सर्व-रूपाविनाशिन् अनिर्देश्य सर्वेन्द्रियागम्य सत्य ।
अचिन्त्याक्षर व्यापकाव्यक्त-तत्व, जगद् भासकाधीश पाय दपायात् ।।४।।
तदेकं स्मरामस्तदेकं जपामः तदेकं जगत् साक्षि-रूपं नमामः ।
तदेकं निधानं निरालम्बमीशम् भवाम्बोधि-पोत शरण्यं व्रजामः ।।५।।
पंच रत्नमिदं स्तोत्रं ब्रह्मण परमात्मनः ।
यः पठेत प्रयतो भूत्वा ब्रह्म सायुज्य माप्नुयात् ।।६।।

अर्थात् हे गुरुदेव ! आप मेरे जीवन के आराध्य, नित्य समस्त लोकों के आश्रय हो, आपको नमस्कार करता हूं, आप ज्ञान स्वरूप विश्व आत्मा स्वरूप अद्वैत तत्व प्रदायक मुक्ति प्रदायक सर्व व्यापी निर्गुण ब्रह्म हो, सगुण रूप में आप हम समस्त शिष्यों के सामने उपस्थित हो, आपको नमस्कार है।

आप ही हम समस्त शिष्यों के आश्रय हो समस्त सिद्धियों के एकमात्र कारण हो, हमारे सृष्टिकर्त्ता, निर्माण-कर्त्ता, पालन कर्त्ता, संहार कर्त्ता हो, आप निश्छल और विविध कल्पनाओं से रहित पूर्णता प्राप्त षोडशकला युक्त रूप हो, आपको हम शिष्यों का नमस्कार !

आप भय का नाश करने वाले विपत्ति को हरने वाले हम सब शिष्यों की एक मात्र गति हो, पवित्रता के साक्षात् स्वरूप, शक्तियों के आधार स्वरूप हो, रक्षकों के पूर्ण रक्षक हो, हम सब शिष्यों का भक्ति भाव से प्रणाम !

हे तपस्वी ! हे प्रभु ! समस्त शिष्यों के हृदय में विराजमान समस्त शिष्यों का कल्याण करने वाले अगोचर होते हुए भी हम सब लोगों के सामने साक्षात् देह रूप में उपस्थित हो, हे सत्य स्वरूप ! हे अचिन्त्य ! हे अक्षर या व्यापक ! हे ब्रह्म स्वरूप मेरे आराध्य ! हे मेरे प्राणों में निवास करने वाले आप हमें अपनी भक्ति अपना ज्ञान अपना स्नेह प्रदान करें।

हम न तो किसी इष्ट को जानते हैं, न मन्त्र, न तन्त्र, न साधना रहस्य, हम तो केवल गुरु मन्त्र का जप करने में समर्थ हैं, आपकी पल-पल की लीलाएं देखते हुए आपको सामान्य मानव की तरह हंसते, उदास होते, विचरण करते कहते-सुनते अनुभव कर भ्रमित हो जाते हैं, हम अपने इस जन्म में संसार के दुःखों में गृहस्थ की परेशानियों में डूबते-उतराते आपका भली प्रकार से चिन्तन नहीं कर पाते, हमें और कुछ नहीं आता हम तो केवल आतुर कंठ से '**गुरुदेव**' शब्द का उच्चारण कर सकते हैं, यह शब्द ही हमारा सब कुछ है हम तो केवल आपका आश्रय ग्रहण करते हैं।

जो इस पंच रत्न स्तवन का नित्य पाठ करता है वह निश्चय ही समस्त विकारों से मुक्त हो कर ब्रह्म स्वरूप गुरु चरणों में लीन होने का सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है।

उपरोक्त पाठ सम्पन्न कर **"दिव्यौघ गुरु यन्त्र"** का पूजन कर अपने हाथ में जल लेकर अपना नाम, पिता का नाम, गोत्र, गुरु का नाम लेते हुए संकल्प करें कि मेरी देह में सूक्ष्मता का भाव आए और पूज्य गुरुदेव मेरे देह में अपनी समस्त शक्तियों, समस्त ज्ञान, सिद्धियों सहित समाहित हों, तत्पश्चात् निम्न स्तोत्र कवच का पाठ करें—

गुरुदेव शिरः पातु हृदयं निखिलेश्वरः ।
कंठं पातु महायोगी वदनं सर्व-दृग-विभुः ।
करो मे पातु पूर्णात्मा पादो रक्षतु स्वामिनः ।
सर्वांग सर्वदा पातु परं ब्रह्म सनातनम् ।
यः पठेद् गुरु कवचं ऋषि-न्यास पुरः सरम् ।
स ब्रह्म ज्ञानमासाद्य साक्षात् ब्रह्ममयो भवेत् ।
भूर्जे विलिख्य गुटिका स्वर्णस्थां धारयेद् यदि ।
कण्ठे दक्षिणे बाहौ सर्व सिद्धिश्वरो भवेत् ।
इत्येतत् परमः गुरु कवचं यः प्रकाशितम् ।
दद्यात् प्रियाय शिष्याय भक्ताय प्रिय धीमते ।

अर्थात् परम पूज्य गुरुदेव हमारे सिर की रक्षा करें, परम पूज्य स्वामी निखिलेश्वरानंद जी हमारे हृदय की रक्षा करें, महायोगी गुरुदेव हमारे कण्ठ की रक्षा करें, और समस्त ब्रह्माण्ड को देखने वाले ब्रह्म स्वरूप गुरुदेव हमारे शरीर की रक्षा करें।

पूर्ण स्वरूप गुरुदेव मेरे दोनों हाथों की रक्षा करें, मेरे स्वामी गुरुवर मेरे दोनों पैरों की रक्षा करें, सनातन ब्रह्म स्वरूप परम पूज्य गुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी मेरे समस्त शरीर की रक्षा करें।

इस गुरु कवच का ऋषि महायोगी छन्द अनुष्टुप् देवता स्वयं गुरुदेव तथा चतुर्वर्ग फल प्राप्ति के लिए यह प्रयोग है, जो शिष्य इस प्रयोग का पाठ करता है, वह समस्त सिद्धियों को प्राप्त कर गुरुदेव का प्रिय बनता हुआ पूर्ण रूप से ब्रह्ममय हो जाता है।

जो शिष्य इस कवच को भोज पत्र पर लिख कर **गुरु तत्व गुटिका** में रख कर अपने कण्ठ या दाहिनी भुजा पर धारण करता है, वह निश्चय ही समस्त प्रकार की सिद्धियों का स्वामी होता है।

मैंने अत्यन्त गोपनीय इस गुरु कवच को स्पष्ट किया है इसे गुरु भक्त बुद्धिमान और प्रिय शिष्य को ही प्रदान करना चाहिए।

इस कवच का पाठ कर साधक **"गुरु सिद्धि माला"** से गुरु मन्त्र का एक माला अथवा तीन माला जप सम्पन्न करें—

गुरु मन्त्र

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

महारूपा जी द्वारा रचित गुरु पूजा का यह अध्याय प्रत्येक शिष्य को अपने हृदय में उतार कर इस प्रकार नित्य प्रति सम्पन्न करना चाहिये कि हर धड़कन के साथ 'जय गुरुदेव' ध्वनि ही निकले। ●

लोक देव, तांत्रिक देव, विश्व वंद्य

श्री हनुमान

शास्त्र अनेक हैं, और प्रत्येक शास्त्र अपनी उपासना पद्धति में एक दूसरे से अलग, इसी विभिन्नता ने आगे चल कर हिन्दू समाज को सम्प्रदाय में विभक्त कर दिया—वैष्णव, शैव, नाथ, स्वामी नारायण, रामानन्द, वल्लभ, श्री समर्थ, वैखानस, मध्व इत्यादि इत्यादि सम्प्रदाय तो कुछ उदाहरण हैं, पूजा साधना अनुष्ठान की इस विभिन्नता से ही हिन्दू संस्कृति का विकास हुआ, वही कुछ आपसी संघर्ष से धार्मिक गुट बन गये, जो शिव की साधना करने लगा उसने अन्य देवी-देवताओं को छोड़ दिया, तो नाथ सम्प्रदाय में कुछ और ही प्रकार की उपासना होने लगी।

इन सब स्थितियों के बावजूद केवल एक देव हैं, जिनके सम्बन्ध में न तो कोई संघर्ष है, न ही वैचारिक भेद और जिन्हें प्रत्येक सम्प्रदाय द्वारा सर्वोपरि देव माना गया है, वे देव हैं श्री हनुमान ! नाम भिन्न हो सकते हैं, लेकिन श्री हनुमान की स्तुति सभी अवश्य करते हैं, और इनका महत्व कितना विशाल है कि अपनी सरलता के कारण श्री हनुमान जन-जन के देव बन गये, ऐसा कोई गांव नहीं होगा, जहां श्री हनुमान का मन्दिर न हो, उनकी पूजा नहीं की जाती हो, कहीं **'वीरदेव'** के रूप में स्थान हैं, तो कहीं **'जागते देवता'** के रूप में, तो कहीं **महावीर** के रूप में देवालय हैं, यहां तक कि झाड़-फूंक, भूत-पिशाच-प्रेत, जनपीड़क, अपदेवता, के नाश हेतु श्री हनुमान को सर्वप्रथम याद किया जाता है, जन-जन में यह भाव स्थायी रूप से विद्यमान हैं, कि **'जय हनुमान'**, **'जय-महावीर'**, **'जय बालाजी'** का स्मरण ही भय मुक्त कर देता है।

हनुमानजनी सुनुर्वायुपुत्रो महाबलः।
रामेष्टः फाल्गुनसखः पिंगक्षोऽमितविक्रमः ।।
उदधिक्रमणश्चैव सीताशोक विनासनः।
लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा ।।
एवं द्वादश नामानि कपीन्द्रस्य महात्मनः।
स्वापकाले प्रबोधे च यात्राकाले च यः पठेत् ।।

तस्य सर्वभयं नास्ति रणे च विजयी भवेत् ।
राजद्वारे गह्वरे च भयं नास्ति कदाचन ।।

१- हनुमान २- अंजनी पुत्र ३- वायु पुत्र ४- महाबल ५-रामेष्ट (राम प्रिय) ६-फाल्गुनसख (अर्जुन के मित्र) ७- पिंगक्षा (भूरी आंखों वाले) ८- अमित विक्रम ९- उदधिक्रमण (समुद्र को जीतने वाले) १०- सीता शोक विनाशक ११- लक्ष्मण प्राणदाता १२- दशग्रीव दर्पहा, इन बारह नामों का जो पठन कर लेता है उसे न तो स्वप्न में, न यात्रा में, न युद्ध में, कोई भय रहता है न राजकीय बाधा आती है और न शत्रु भय रहता है, श्री हनुमान का केवल नाम स्मरण करने वाला साधक विजयी हो जाता है।

केवल इसी बात से यह स्पष्ट होता है कि श्री हनुमान की साधना का कितना महत्व है और कितनी सरल है इनकी साधना।

आठ यौगिक सिद्धियां और श्री हनुमान

आठ यौगिक सिद्धियां—अणिमा, महिमा गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व ये आठों सिद्धियां परम पूज्य श्री हनुमान जी में सम्यक रूप से प्रतिष्ठित थीं, और जैसा कि शास्त्रोक्त कथन है कि जैसे देव की पूजा साधना करते हैं, वैसी ही सिद्धि प्राप्त होती है, तो इन आठ यौगिक सिद्धियों की प्राप्ति भी श्री हनुमान साधना से ही सम्भव है, इसमें कोई संदेह नहीं।

श्री हनुमान तो रुद्रावतार हैं, **तारसारोपनिषद** में लिखा है—

ॐ यो ह वै श्री परमात्मा नारायणः स भगवान् मकारवाच्यः शिवस्वरूपो हनूमान् भूर्भुवः स्वः तस्मै वै नमो नमः।

अर्थात् परब्रह्म नारायण शिव स्वरूप हनुमान ही हैं, श्री शिव के ग्यारह रुद्र स्वरूपों में ग्यारहवें रूद्र श्री हनुमान हैं, जो कि शत्रु संहारकर्ता, अति बलशाली, और इच्छानुसार कार्य करने वाले हैं।

श्री हनुमान की मानस साधना भी सम्भव है, मूर्ति साधना भी की जा सकती है, मान्त्रिक साधना और तान्त्रिक साधना भी है, इसी कारण रामायण में लिखा है कि परब्रह्म रुद्र रूप हनुमान की महिमा उन्हीं की कृपा से समझ में आ सकती है, वे सर्व मंगल निधि, सच्चिदानन्द घन परमब्रह्म रुद्र रूप हनुमान तो ओंकार स्वरूप पूर्ण ब्रह्म हैं।

वर्तमान युग और श्री हनुमान

श्री हनुमान जन-जन के देव अपनी सरलता और भक्तों पर सहज कृपा कर देने के कारण ही बने हैं, साधक चाहे किसी भी मत का हो, कोई भी उपासना अपनाता हो, वह श्री हनुमान की साधना सम्पन्न कर सकता है, जीवन में सबसे बड़ा दुख 'भय' है, और जो साधक श्री हनुमान का नाम ही स्मरण कर लेता है, वह भय पर विजय प्राप्त कर लेता है।

विशेष बात यह है कि श्री हनुमान अपने भक्त को, अपने साधक को बुद्धि, बल, वीर्य प्रदान करते हैं अर्थात् मानसिक दुर्बलता हो या शारीरिक दुर्बलता, रोग हो अथवा शोक श्री हनुमान साधना से इस पर विजय प्राप्त होती है, श्री हनुमान चरित्र में एक पूर्ण आदर्श व्यक्तित्व उभरता है, जिसमें न तो कोई कमी है, न ही चारित्रिक दुर्बलता, भक्ति, श्रद्धा, ब्रह्मचर्य, चरित्र रक्षा, बल-बुद्धि का विकास, निष्काम भाव से कार्य करने की प्रेरणा श्री हनुमान चरित्र से ही प्राप्त होती है, वर्तमान युग में तो श्री हनुमान साधना पूर्ण साधना मानी जा सकती है। ●

श्री हनुमान जयन्ती — (१७-४-९२)

चमत्कार को नमस्कार है

तो फिर कीजिए

बजरंग बली हनुमत् साधना

कहावत है कि **"घर का जोगी जोगिया और आन गांव का सिद्ध"** यह बात पवन पुत्र रुद्रावतार श्री हनुमान के सम्बन्ध में लागू होती है, श्री हनुमान साधना कर कष्टों का निवारण जिस सरल और सहज भाव से हो सकता है. उतनी सरल कोई अन्य साधना नहीं है, फिर क्लिष्ट साधनाएं क्यों की जांय, हनुमान साधना तो रामबाण साधनाएं हैं।

कई वर्ष पुरानी बात है, मेरे एक मित्र का नौकरी के लिए इन्टरव्यू था, मित्र बड़े परेशान और वास्तव में भयभीत थे, नौकरी की बहुत सख्त आवश्यकता थी, इन्टरव्यू के लिए बुलावा दो सौ से अधिक लोगों का था और चयन केवल पांच का होना था, चिन्ता से, अनिश्चय से मित्र बड़े व्याकुल थे, मैंने कहा कि इन्टरव्यू में भीतर जाने से पहले शान्त मन से एक बार **हनुमान-तन्त्र चमत्कारानुष्ठान** का पाठ अवश्य कर लेना, अब परीक्षार्थी तो पुस्तक टटोल रहे हैं और मित्र एक कुर्सी पर बैठ कर हनुमान तन्त्र चमत्कारानुष्ठान का पाठ कर रहे थे, पाठ करने के बाद उनका नम्बर आया और वे सहज भाव से पूरे आत्म विश्वास के साथ भीतर गये, बिना किसी सिफारिश के उनका सलेक्शन हो गया, यह श्री हनुमान चमत्कार ही है।

यह सिद्ध बात है कि कृष्ण पक्ष में अर्द्ध रात्रि के पश्चात् शहर क्या घने जंगल अथवा श्मशान में भी हनुमान मन्त्र, हनुमान चालीसा इत्यादि का पाठ करते हुए निकल जांय तो सर्प, बिच्छू, जंगली जानवर क्या भूत-प्रेत-पिशाच भी आपके पास नहीं फटक सकते।

मरणान्तक पीड़ा से व्याप्त कष्ट भोगते हुए रोगियों का हनुमान साधना से अभिमन्त्रित कर जल पिलाया है और हनुमान जी की कृपा से वे पूर्ण स्वस्थ हुए हैं, क्योंकि ऐसा चमत्कार केवल हनुमान ही कर सकते हैं, वे अपने भक्त को कष्ट में नहीं देख सकते और उनके लिए कुछ भी करना सहज संभव है, जो एक संजीवनी बूंटी के लिए पूरा पहाड़ उठा कर ले जा सकते हैं, जो रावण जैसे महा प्रतापी का अहंकार चूर-चूर कर सकते हैं ऐसे एकादश रुद्र की महिमा उनकी भक्ति करके ही जानी जा सकती है।

श्री हनुमान प्रतीक हैं—ब्रह्मचर्य, बल, पराक्रम, वीरता, भक्ति, निडरता, सरलता, और विश्वास के, इनके एक-एक गुण के सम्बन्ध में हजारों अध्याय लिखे जा चुके हैं, निर्बल हो कर आधीन हो कर जीना भी कोई जीना है क्या? शत्रु अथवा बाधा बड़ा अथवा छोटा नहीं होता, वह तो केवल व्यक्ति अथवा घटना होती है, और उस पर आत्म विश्वास द्वारा विजय प्राप्त की जा सकती है और जो श्री हनुमान का साधक है उसके भीतर तो आत्म-विश्वास की आत्म शक्ति छलकती रहती है, उसे ज्ञान है कि मेरे पीठ के पीछे प्रबल पराक्रम देव श्री हनुमान बजरंग बली खड़े हैं फिर मुझे काहे की चिन्ता।

जन-जन में श्री हनुमान जी के प्रति एक वीरता, गौरव का भाव भरा हुआ है और इनके स्थान-स्थान पर मन्दिर बने हुए हैं, आप कभी श्री हनुमान जी की मूर्ति के सामने जा कर खड़े हो कर और उनके नेत्रों की ओर देखें तो सीधा आपके मन में बल पराक्रम का श्रेष्ठ भाव ही आयेगा, निर्बलता हवा में विलीन हो जायेगी, हनुमान साधना के सम्बन्ध में प्रमुख ग्रन्थ हैं—हनुमदुपासना, पंशाचमास्यन-स्तोत्र, कुसुमांजली, श्री मद्रामपदनात्मच, चतुर्थदश रहस्यम, श्री हनुमान बाहूक, हनुमत सतक, मारुति स्तोत्रम ये नो हिन्दी और संस्कृत में प्रमुख ग्रन्थ हैं, इसके अलावा मराठी, गुजराती, बंगला, उड़िया, तेलगू, कन्नड़, मलयालम तथा अंग्रेजी में भी विशेष ग्रन्थ हैं।

सरल कृपालु, सिद्ध देव श्री हनुमान की साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिनकी परिपालना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा रुष्ट हनुमान सर्वनाश ही कर देते हैं, साधक लोग इन सब बातों की ओर विशेष ध्यान दें।

१-हनुमान साधना के दिन के प्रत्येक कार्य में शुद्धता होना आवश्यक है, जो भी प्रसाद नैवेद्य अर्पित करें वह शुद्ध घी का बना होना चाहिए।

२-कुएं के जल से स्नान कर पूजा करना श्रेष्ठ माना गया है।

३-हनुमान मूर्ति को-तिल के तेल में मिले हुए सिन्दूर का लेपन करना चाहिए।

४-श्री हनुमान को केवल केसर के साथ घिसा हुआ लाल चन्दन लगाना चाहिए।

५-पुष्पों में केवल लाल पीले और बड़े फूल अर्थात् कमल, हजारा, सूर्य मुखी, के फूलों को ही अर्पित करना चाहिए।

६-नैवेद्य में प्रातः पूजन में गुड़, नारियल का गोला, और लड्डू मध्याह्न में गुड़, घी और गेहूं की रोटी का चूरमा अथवा मोटा रोट तथा रात्रि में आम, अमरूद अथवा केला का नैवेद्य अर्पित करना चाहिए।

७-हनुमान साधना में घी में भीगी हुई एक अथवा पांच बत्तियों का ही दीपक जलाना चाहिए, यह बात महत्वपूर्ण है।

८-हनुमान साधना के दिवस साधक ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्ण रूप से अवश्य पालन करें, और जो नैवेद्य श्री हनुमान को अर्पित हो, उसी को ग्रहण करना चाहिए।

९-हनुमान साधना में मन्त्र जप बोल कर अर्थात् आवाज के साथ किया जाता है और श्री हनुमान की मूर्ति के समक्ष नेत्रों की ओर देखते हुए मन्त्र जप सम्पन्न करें।

१०-अनिष्ट की इच्छा से श्री हनुमान देव का अनुष्ठान करना गलत है, स्वकल्याण, स्वशक्ति की भावना से ही कार्य करना चाहिए।

११-हनुमान साधना में दो प्रकार की मालाओं का प्रयोग किया जाता है, सात्विक कार्यों हेतु **रुद्राक्ष माला** तथा तामसी पराक्रमी कार्यों हेतु **मूंगा माला** का प्रयोग करें।

१२-श्री हनुमान, सेवा पूजा के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, अतः साधक द्वारा सेवा करके फल प्राप्ति की इच्छा रखनी चाहिए, पूजा में पूर्ण श्रद्धा और सेवा भाव होना चाहिए।

कब करें हनुमान साधना

जिस प्रकार आप नित्य प्रति अपना नित्य कर्म करते हैं, उसी प्रकार हनुमान जी की साधना तो प्रत्येक साधक को नित्य ही करनी चाहिए, संकट के समय तो हर कोई देवता को याद करता है, लेकिन वास्तविक भक्ति तो शुभ और अशुभ दोनों समय में पूर्ण श्रद्धा से की गई साधना से ही है।

मंगलवार पवन पुत्र श्री हनुमान का दिन है, इस दिन साधक साधना के ऊपर दिये गये सभी नियमों का पालन करते हुए विशेष अनुष्ठान अवश्य सम्पन्न करें, इसके अतिरिक्त शनिवार को भी हनुमान पूजा का विधान है।

श्री हनुमान जयन्ती

चैत्र शुक्ल पूर्णिमा शुक्रवार दिनांक १७-४-९२ को हनुमान जयन्ती है, इस दिन साधक संकल्प लेकर विशेष अनुष्ठान अवश्य प्रारम्भ करें, हनुमान जयन्ती ऐसा मुहूर्त सिद्ध दिवस है, जिस दिन लिया गया संकल्प निष्फल नहीं जा सकता और साधक सात दिन अथवा २१ दिन में ही प्रत्यक्ष प्रमाण सहित फल प्राप्त करता है।

यह दिवस कुछ विशेष संकल्पों का दिवस है, इस दिन प्रत्येक साधक अपने जीवन में परिवर्तन के लिए अपनी आत्म शक्ति, आत्म विश्वास, बल वीर्य, बुद्धि, हेतु विशेष संकल्प ले कर नये जीवन की ओर प्रवेश करें क्योंकि साधना में श्री हनुमान का आशीर्वाद और शक्ति है।

श्री हनुमान साधना में जो ध्यान किया जाता है, उसका विशेष महत्व है, वर्तमान समय में कामना के अनुकूल स्वरूप की सकाम साधना ही श्रेष्ठ है, जैसा ध्यान करें वैसी ही मूर्ति अपने मानस में स्थिर करें और ऐसा अभ्यास करें कि नेत्र बन्द कर लेने पर ही वही स्वरूप दिखाई पड़े।

श्री हनुमान ध्यान

उद्यन्मार्तण्डकोटिप्रकटरुचियुतं चारुवीरासनस्थं।
मौञ्जीयज्ञोपवीतारुणरुचिरशिखाशोभितं कुण्डलांकम् ॥
भक्तानामिष्टदं तं प्रणतमुनिजनं वेदनादप्रमोदं।
ध्यायेद्नित्यं विधेयं प्लवगकुलपतिं गोष्पदी भूतवारिम् ॥

उदय होते हुए करोड़ों सूर्यों जैसे तेजस्वी, मनोरम, वीर आसन में स्थित मुञ्ज की मेखला और यज्ञोपवीत धारण किये हुए कुण्डल से शोभित मुनियों द्वारा वन्दित, वेद नाद से प्रहर्षित वानरकुल स्वामी, समुद्र को एक पैर में लांघने वाले देवता स्वरूप भक्तों को अभीष्ठ फल देने वाले श्री हनुमान मेरी रक्षा करें।

हनुमान साधना में अलग-अलग कार्यों की संकल्प पूर्ति हेतु, बल प्राप्ति हेतु, अलग-अलग मन्त्र, सामग्री एवं जप अनुष्ठान का विधान है।

पूजन सामग्री

श्री हनुमान साधना में षोडशोपचार पूजा का ही उल्लेख आया है, इस पूजा में शुद्ध कुएं का जल, दूध, दही, घी, मधु और चीनी का पंचामृत, तिल के तेल में मिला सिन्दूर, रक्त चन्दन, लाल पुष्प, जनेऊ, सुपारी, नैवेद्य में गुड़, नारियल का गोला, पांच बत्ती का दीप, अष्टगन्ध आवश्यक है।

साधना सामग्री

हनुमान साधना में अपने पूजा स्थान में एक आला (ताक) निश्चित कर दें, उस स्थान पर हनुमान चित्र, सामग्री के अतिरिक्त केवल राम सीता का चित्र अथवा मूर्ति रख सकते हैं अन्य कोई चित्र या मूर्ति रखना वर्जित है।

इस साधना में सात सामग्रियों का पूरा विधान है प्रत्येक सामग्री एक विशेष कार्य हेतु सिद्ध होती है और उसकी पूजा समर्पण उसी कार्य को ध्यान में रखते हुए करें—

अमित विक्रमाय हनुमत् यन्त्र—पूर्ण कल्याण एवं सर्वोन्नति हेतु

तीन मधुरूपेण रुद्राक्ष—संकल्प सिद्धि हेतु

गोपद् गुटिका—बल प्राप्ति हेतु

बालादिकम् दंड—शत्रु बाधा निवारण हेतु

मारुति मुञ्ज फल—अनंग शक्ति, वीर्य शक्ति हेतु

मारुति मूंगा माला तथा रुद्राक्ष माला—कार्य अनुसार जप हेतु

हनुमान मुद्रिका—रक्षा हेतु धारण करने के लिए
हनुमान चित्र—वीर मुद्रा में स्थित महाबली

विधान

हनुमान जयन्ती तारीख १७-४-९२ शुक्रवार को साधक स्नान कर शुद्ध लाल वस्त्र धारण कर स्वयं उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठें, तथा अपने सामने हनुमान जी की मूर्ति तथा चित्र स्थापित करें, दक्षिणाभिमुख हनुमान साधना का ही विधान है, सामने पूजा स्थान पर गोबर तथा मिट्टी मिला कर उसे लीप दें अथवा चौकी बना कर पूरी चौकी पर सिन्दूर छिड़क दें और उस पर अपने सामने हनुमान चित्र के आगे सभी सामग्री क्रम से तिल की सात ढेरी पर रख दें तत्पश्चात् पूजन कार्य प्रारम्भ करें, सबसे पहले हाथ में जल ले कर संकल्प करें कि मैं अमुक (अपना नाम), अमुक पुत्र (पिता का नाम) अमुक कार्य हेतु यह अनुष्ठान सम्पन्न कर रहा हूं, श्री हनुमान मुझ पर पूर्ण कृपा करें।

अब साधक गुरु ध्यान कर वीर मुद्रा में बैठ कर दीपक जलाएं और फिर हनुमान मूर्ति पर हनुमान यन्त्र पर तथा ताबीज को पंचामृत से फिर शुद्ध जल से स्नान कराकर तेल मिले सिन्दूर का लेपन करें, यह लेपन कर लाल पुष्प चढ़ाएं, वस्त्र अर्पित करें, अब सामने जनेऊ सुपारी रख कर ध्यान मन्त्र का ग्यारह बार जप कर श्री हनुमान देव का आह्वान करें तथा नैवेद्य अर्पित करें, साधक व्रत रखें और नियम से कार्य करें।

अलग-अलग कार्यों हेतु अलग-अलग मन्त्र का विधान है इसे शुद्ध रूप से कम से कम पांच माला का जप अवश्य करें आगे यह अनुभूत मन्त्र दिये जा रहे हैं, सर्वप्रथम तो साधक एक माला बीज मन्त्र का जप करें—

हनुमान बीज मन्त्र

।। ॐ हुं हुं हसौं हस्फ्रौं हुं हुं हनुमते नमः ।।

अब अपने कार्य के अनुरूप मन्त्र अनुष्ठान करें—

१-कार्य सिद्धि के लिए

ॐ नमो भगवते सर्व ग्रहान् भूतभविष्य-वर्तमानान् दूरस्थ समीपस्थान् छिन्धि छिन्धि भिन्दि भिन्दि सर्व काल दुष्टबुद्धिनुच्चाटयोच्चाटय परबलान् क्षोभय क्षोभय मम सर्व कार्याणि साधय साधय। ॐ नमो हनुमते ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट्। देहि ॐ शिव सिद्धिं, ॐ ह्रां ॐ ह्रीं ॐ ह्रूं ॐ ह्रैं ॐ ह्रौं ॐ ह्रः स्वाहा ।।

२-सर्व विघ्न निवारण के लिए

ॐ नमो हनुमते परकृतयन्त्रमन्त्रपराहंकारभूत-प्रेत पिशाच परदृष्टिसर्वविघ्नमार्जनहेतु विद्यासर्वोग्र-भयान् निवारय निवारय वध वध लुण्ठ लुण्ठ पच पच विलुंच विलुंच किलि किलि किलि सर्व-कुयन्त्राणि दुष्टवाचं ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा।

३-शत्रु संकट निवारण के लिए

।। ॐ पूर्व कपिमुखाय पंचमुखहनुमते टं टं टं टं टं सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा ।।

४-प्रेत बाधा निवारण के लिए

।। ॐ दक्षिणमुखाय पंचमुख हनुमते करालवदनाय नरसिंहाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सकलभूतप्रेत-दमनाय स्वाहा ।।

५-महामारी, अमंगल, ग्रह दोष एवं भूत प्रेतादि नाश के लिए

।। ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ॐ नमो भगवते महाबलपराक्रमाय भूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी यक्षिणी पूतनामारी महामारी राक्षस भैरव वेताल ग्रह राक्षसादिकान् क्षणेन हन हन भंजय भंजय मारय मारय शिक्षय शिक्षय महा-माहेश्वररुद्रावतार ॐ ह्रूं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते हनुमदाख्याय रुद्राय सर्वदुष्टजनमुख स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ठं ठं ठं फट् स्वाहा।

इन मन्त्रों में जो शक्ति है, वह तो साधक श्री हनुमान अनुष्ठान सम्पन्न कर ही प्रत्यक्ष रूप से अनुभव कर सकता है, विधान ऐसा है कि जितनी संख्या में मन्त्र जप करें उसका दसवें हिस्से मन्त्र का हवन अवश्य करें।

अनुष्ठान पूर्ण होने पर साधक मुद्रिका को धारण कर लें, मधुरूपेण रुद्राक्ष किसी हनुमान मन्दिर में अर्पित कर दें अन्य सामग्री अपने पूजा स्थान में रखे रहे।

साधकों को इस महत्वपूर्ण अवसर का पूर्ण लाभ प्राप्त हो, वे हनुमान साधना सम्पन्न कर जीवन को नया तेज दें इस हेतु सभी सामग्री का एक पैकेट हनुमान साधना सिद्धि पैकेट बनाया गया है इसे समय रहते प्राप्त कर लें।

श्री शनि जो कि सबसे प्रबल देव माने गये हैं, और यदि किसी को शनि पनौती हो, और शनि बाधा हो तो वह साधक शनिवार के दिन श्री हनुमान मूर्ति पर तेल चढ़ाएं और हनुमान मन्त्र अनुष्ठान करें तो यह बाधा भी पूर्ण रूप से दूर हो जाती है, ये सभी मन्त्र स्वतः अनुभव सिद्ध मन्त्र हैं, आशा है, साधक गण इनसे अवश्य लाभ प्राप्त करेंगे।

हनुमन्मन्त्र चमत्कारानुष्ठान

श्री शंकराचार्य हनुमान साधना के अनन्य ज्ञाता माने जाते हैं, उन्होंने हनुमन्मन्त्र चमत्कारानुष्टान पद्धति की रचना की, इस महाग्रन्थ में साधना के सम्बन्ध में विशेष विवरण इत्यादि दिया हुआ है, मूल रूप से बीस मन्त्र प्रधान हैं।

इन बीस मन्त्रों में से पाठकों हेतु सात मुख्य मन्त्र दिये जा रहे हैं, मंगलवार के दिन अपनी बाधा के अनुसार, अपने कार्य के अनुसार हनुमान पूजन कर एक मंगलवार से दूसरे मंगलवार तक ग्यारह हजार मन्त्र का जप करना है, इस अनुष्ठान हेतु मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **'हनुमान गुटिका'** लाल कपड़े में बांध कर काले डोरे से अपने गले में धारण कर हनुमान चित्र के आगे अनुष्ठान सम्पन्न करना है, पाठक गण मन्त्र को ध्यान से देखेंगे तो मन्त्र में ही सम्बन्धित कार्य विवरण हैं—

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय विश्वरूपाय अमित-विक्रमाय प्रकटपराक्रमाय महाबलाय सूर्य-कोटिसमप्रभाय रामदूताय स्वाहा ।।

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय सर्वशत्रुसंहारणाय सर्वरोगहराय सर्ववशीकरणाय रामदूताय स्वाहा ।।

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय भक्तजनमनः कल्पना-कल्पद्रुमाय दुष्टमनोरथस्तम्भनाय प्रभंजन-प्राणप्रियाय महाबलपराक्रमाय महाविपत्तिनिवारणाय पुत्रपौत्रधनधान्यादिविविधसम्पत्प्रदाय राम-दूताय स्वाहा ।।

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय वज्रदेहाय वज्र-नखाय वज्रसुखाय वज्ररोम्णे वज्रनेत्राय वज्रदन्ताय वज्रकराय वज्रभक्ताय रामदूताय स्वाहा ।।

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय परयन्त्रमन्त्रतन्त्र-त्राटकनाशकाय सर्वज्वरच्छेदकाय सर्वव्याधिनिकृन्त-काय सर्वभयप्रशमनाय सर्वदुष्टमुखस्तम्भनाय सर्व कार्यसिद्धिप्रदाय रामदूताय स्वाहा ।।

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय देवदानवयक्ष-राक्षस-भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-दुष्टग्रह बन्धनाय रामदूताय स्वाहा ।।

ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय पंचवदनाय पश्चिममुखे गरुडाय सकलविघ्ननिवारणाय राम-दूताय स्वाहा ।।

साधना सिद्धि द्वारा ऐसा भी संभव है–

★ जब आपके घर में परिपूर्णता हो

★ जब आप दूसरों को कुछ देने में समर्थ हों

★ जब आप पर कोई तांत्रिक प्रयोग न कर सके

★ जब आपके जीवन में रक्षा कवच बन जाए

दो साधनाएं जो आपका जीवन बदल सकती हैं

साधना क्षेत्र में जब सिद्धि प्राप्त योगियों का वर्णन पढ़ते हैं, तो एक अजीब तार्किक प्रश्न मन में उमड़ते हैं, कि क्या साधना द्वारा ऐसा भी सम्भव है, क्या साधना का इतना उच्च स्तर प्राप्त किया जा सकता है, क्या साधना द्वारा सिद्धि प्राप्त कर साधक कल्याण के साथ-साथ जन कल्याण का मार्ग भी प्राप्त कर सकता है, इनकी व्याख्या कुछ पृष्ठों में सम्भव नहीं है, साधना का क्षेत्र तो अत्यन्त वृहद है।

यह अंक शक्ति, और सिद्धि का अंक है और गुरु श्रीमुख से दो ऐसी साधनाओं का विधान प्राप्त हुआ है, जिनमें पूर्णता, गुरु कृपा से ही सम्भव है।

अन्नपूर्णा साधना

अन्न का तात्पर्य केवल धान्य से ही नहीं है, अन्न का तात्पर्य है, धन-धान्य, पुत्र-पौत्र, लाभ, यश, कीर्ति और जिस घर में यह सब बातें होती हैं, जहां आने वाले कल की चिन्ता नहीं रहती, जहां स्वयं निश्चिन्त होकर जीवन जिया जाता है, और जहां दूसरों को दान देने की जन कल्याण की भावना निहित रहती है, जहां साधु महात्माओं का आदर सम्मान होता है, जहां भिक्षुकों को भोजन वस्त्र दान दिया जाता है, वहां यह सब कृपा अन्नपूर्णा देवी की कृपा से ही सम्भव है।

क्या आपने कभी यह अनुभव किया है कि स्वयं स्वादिष्ट वस्तुओं का आनन्द लेने के साथ यदि दूसरों

को यह आनन्द का अनुभव कराया जाय तो कितनी बड़ी खुशी मिलती है और यह दाता की स्थिति 'अन्नपूर्णा सिद्धि' द्वारा प्राप्त हो सकती है, अन्नपूर्णा वह शक्ति है, जिसके द्वारा आपके पास कुछ भी नहीं होते हुए भी आप हजारों को भोजन कराने की सामर्थ्य प्राप्त कर सकते हैं, दान दे सकते हैं, घर में कभी कोई कमी नहीं रह सकती है, यह प्रयोग तो अत्यन्त ही सरल एवं शुद्ध मन से किया जाने वाला प्रयोग है, गृहस्थ व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ पूजन सम्पन्न करे तो शीघ्र फल प्राप्ति होती है।

साधना विधि

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, इस साधना को किसी भी पुष्य नक्षत्र से प्रारम्भ करना चाहिए, यह एक महीने की साधना है, पुष्य नक्षत्र से यह साधना प्रारम्भ कर, अगले पुष्य नक्षत्र में ही इस साधना को समाप्त किया जाता है, नित्य रात्रि को इक्यावन माला मन्त्र जप होना आवश्यक है, इस कार्य में नित्य ज्यादा से ज्यादा तीन घण्टे लगते हैं।

साधक स्नान कर पीली धोती पहन लें और कन्धों पर पीली धोती डाल दें, यह रेशम की धोती होनी चाहिए, फिर सामने घी का दीपक लगा लें और अगरबत्ती प्रज्वलित कर दें।

इस साधना में निम्न उपकरणों की अनिवार्यता होती है, जो मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होनी चाहिए।

१-अन्नपूर्णक सपर्य्या चित्र, २-अन्नपूर्णा विग्रह यन्त्र, ३-मयूर शिखा, ४-दक्षिणेश्वरी हृदय यन्त्र, ५-शतपुष्पा, ६-धीरकुच्ची माला, ७-आजीवन अन्नपूर्णा सामीप्य सिद्ध विग्रह।

पुष्य नक्षत्र की रात्रि को उत्तर की ओर मुंह कर रेशम के बने हुए आसन पर बैठ जांय, सामने एक हाथ चौड़ा पीला रेशमी वस्त्र बिछा दें और सामने अन्नपूर्णा चित्र को स्थापित कर दें, फिर बाकी यन्त्रों को भी उसके सामने ही स्थापित कर दें, इसके बाद सात जायफल रख दें और पास में जल पात्र, दीपक, अगरबत्ती, केसर, कुंकुम, अक्षत तथा नारियल रख दें।

इसके बाद कुंकुम या केसर से अन्नपूर्णा चित्र का पूजन करें सभी यन्त्रों को जल से धो कर पौंछ कर कुंकुम की बिन्दिया लगावें, अगरबत्ती दीपक लगा लें और प्रत्येक जायफल के सामने एक बदाम एक लौंग तथा एक इलायची का भोग लगावें और फिर इक्यावन माला मन्त्र जप करें।

मन्त्र जप से पूर्व विनियोग और न्यास कर दें, विनि-योग का तात्पर्य उस को अनुष्ठान रूप में सम्पन्न करने की अनुज्ञा है और न्यास का तात्पर्य अपने शरीर में अन्नपूर्णा को स्थापित करने की प्रक्रिया है।

विनियोग

ॐ अस्य श्री अन्नपूर्णा महादेवी हृदय स्तोत्र महा मन्त्रस्य श्री महाकाल भैरव ऋषि, उष्णिक् छन्दः महाषोढा स्वरूपिणी महाकाल सिद्धा श्री अन्नपूर्णा अम्ब देवता, ह्रीं बीजं, ह्रूं शक्तिः क्रीं कीलकं, श्री अन्नपूर्णा अम्ब प्रसादात् समस्त पदार्थ प्राप्त्यर्थे मन्त्र जपे विनियोगः।

हाथ में जल ले कर उच्चारण करता हुआ जल जमीन पर छोड़ दें।

इसके बाद न्यास करें और उच्चारण करता हुआ पूरे शरीर के अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करता हुआ अपने पूरे शरीर में अन्नपूर्णा को स्थापित करें।

न्यास

श्रीमहाकाल भैरव ऋषये नमः शिरसि
उष्णिक् छन्दसे नमः मुखे,
महाषोढा स्वरूपिणी महाकाल सिद्धि श्री अन्नपूर्णा अम्ब देवतायै नमः हृदि,

ह्रीं बीजाय नमः लिंगे
ह्रीं शक्तये नमः नाभौ,
क्रीं कीलकाय नमः पादयो
समस्त पदार्थ प्राप्त्यर्थे मन्त्र जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

मन्त्र

।। ॐ क्रीं क्रूं क्रों हूं हूं हूं ह्रीं ह्रीं
ॐ ॐ ॐ अन्नपूर्णायै नमः ।।

पूरे साधना काल में तीन बातों का पालन आवश्यक है—

१-पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें।

२-मध्याह्न में एक समय भोजन करें पर उसमें स्वादिष्ट एवं विविध व्यंजन तथा खाद्य पदार्थ हों।

३-बीच में व्यवधान या अनियमितता न रखते हुए, अगले पुष्य नक्षत्र तक नित्य रात्रि को इक्यावन माला मन्त्र जप **चैतन्य स्फटिक माला** से करें।

अगले पुष्य नक्षत्र को मन्त्र पूरा होने पर अन्नपूर्णा सिद्धि स्वतः प्राप्त हो जाती है, दूसरे दिन सुबह सात कन्याओं को भोजन करवा दें और इन सभी यन्त्रों और चित्रों को अपने पूजा स्थान में या किसी एकान्त स्थान में स्थापित कर दें।

विंध्यवासिनी साधना

जीवन जीना वास्तव में तलवार के धार पर चलने के समान है, और गृहस्थ व्यक्ति के लिए तो परेशानियों का अन्त ही नहीं रहता, इन परेशानियों से गुजरते हुए यदि व्यक्ति कुछ विशेष कर दिखाता है, तो वास्तव में ही उसका जीवन धन्य है, कहते हैं कि आपदाएं, बाधाएं, निमन्त्रण दे कर नहीं आतीं, कभी आर्थिक तंगी, तो कभी बीमारी, कभी शत्रुओं द्वारा पीड़ा, कभी राज्य बाधा, कभी व्यापार बाधा, एक न एक बाधा चलती रहती है और यदि इन बाधाओं के साथ किसी प्रकार की अन्य तांत्रिक बाधा हो जाय तो जीवन में कष्ट ही कष्ट बढ़ जाते हैं।

जो व्यक्ति अपनी रक्षा स्वयं नहीं कर सकता, वह दूसरों की क्या रक्षा करेगा और क्या बाधाओं से रक्षा हो सकती है, साधना क्षेत्र में विंध्यवासिनी देवी का स्थान बहुत उच्च है, विंध्यवासिनी मां दुर्गा का रक्षा स्वरूप है, और उच्च कोटि के तांत्रिकों ने भी यह माना है, कि यदि किसी साधक द्वारा विंध्यवासिनी सिद्धि प्राप्त कर ली जाती है, तो उस पर किसी प्रकार की बाधा का प्रकोप प्रभाव नहीं डाल सकता है यहां तक कि कोई तांत्रिक कृत्या वार भी हो, वह भी निष्फल हो जाता है, और तन्त्र क्षेत्र में साधना करने वाले जानते हैं कि कृत्या साधना कितनी तीव्र साधना है।

इसके अतिरिक्त तन्त्र साधना करने वाले साधक को यह जान लेना चाहिए कि तन्त्र में यदि प्रयोग अनुष्ठान ठीक तरीके से सम्पन्न नहीं किया गया तो उसका उलटा वार भी पड़ सकता है और लाभ के स्थान पर हानि हो सकती है, इस हेतु यदि साधक विंध्यवासिनी साधना सम्पन्न कर लेता है, तो वह तन्त्र साधना के किसी भी क्षेत्र में प्रवेश कर पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है क्यों कि विंध्यवासिनी देवी उस साधक को अभेद्य कवच प्रदान कर देती है जिससे साधक भय रहित, बाधा रहित, कष्ट रहित हो जाता है।

विंध्यवासिनी साधना केवल ग्यारह दिन का प्रयोग है जब ग्यारहवें दिन अनुष्ठान पूर्ण होता है तो विंध्येश्वरी निश्चय ही सम्मुख प्रकट हो कर साधक को पूर्ण आशीर्वाद देते हुए एक ऊर्जा के रूप में उसके भीतर समाहित हो जाती है।

साधना प्रयोग

इस साधना में विनियोग, न्यास, करन्यास करना आवश्यक है, और जो सात सुपारी पूजा में रखी जाती

है, उन को साधक ग्यारहवें दिन के पश्चात् एक काले कपड़े में बांध कर अपने घर में किसी प्रमुख स्थान पर रख दें तो बाधाओं का पूर्ण निराकरण हो जाता है।

विनियोग

ॐ अस्य विंध्यवासिनी मन्त्रस्य, विश्रवा ऋषि: अनुष्टुपछन्द: वध्यवासिनी देवता ममाभीष्ट-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

न्यास

ॐ विश्रवऋषये नमः शिरसि
अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे
विंध्यवासिनी देवतायै नमः हृदि
विनियोगाय नमः सर्वांगे

करन्यास

एह्येहि अंगुष्ठाभ्यां नमः
यक्षि-यक्षि तर्जनीभ्यां नमः
महायक्षि मध्यमाभ्यां नमः
वटवृक्षनिवासिनी अनामिकाभ्यां नमः
शीघ्रं मे सर्वसौख्यं कनिष्ठिकाभ्यां नमः
कुरु-कुरु स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

ध्यान

अरुणाचंदनवस्त्रविभूषितां
सजलतोयदतुल्यनरूरुहाम्।
स्मरकुरंगदृशं विंध्यवासिनी
क्रमुकनागलतादलपुष्कराम् ।।

प्रयोग विधि

इस महत्वपूर्ण साधना को सौभाग्यशाली साधक सम्पन्न कर सकता है, किसी भी अमावस्या की रात्रि को साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने **"विंध्येश्वरी साधना यन्त्र"** स्थापित कर दें, उसके सामने सात गोल सुपारियां रख दें, फिर सामने घी का दीपक एवं अगरबत्ती लगाएं।

सुपारी पूजा

ॐ कामदायै नमः
ॐ मानदायै नमः
ॐ नक्तायै नमः
ॐ मधुरायै नमः
ॐ मधुराननायै नमः
ॐ नर्मदायै नमः
ॐ भोगदायै नमः

इसके बाद सोने के अत्यधिक पतले तार को **विंध्येश्वरी यन्त्र** पर लपेटें तथा पूर्ण सिद्धि के लिए प्रार्थना करें।

पूजन के बाद **स्फटिक माला** से मन्त्र जप सम्पन्न करें, नित्य इक्यावन माला मन्त्र जप इस यन्त्र के सामने आवश्यक है।

मन्त्र

एह्येहि यक्षि महायक्षि विंध्यवासिनी शीघ्रं
मे सर्व तन्त्र सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।।

यदि आश्चर्यजनक सिद्धि प्राप्त करना हो तो नित्य एक सौ एक माला मन्त्र जप आवश्यक है।

ये दोनों महत्वपूर्ण साधनाएं सरल भाव से, शुद्ध हृदय से, शुद्ध कामनाओं के साथ सम्पन्न करनी है अन्नपूर्णा और विंध्यवासिनी तो इस युग में गृहस्थ के लिए प्रधान अधिष्ठात्री देवियां हैं, जहां इन दोनों का निवास रहता है वह घर तो वास्तव में धरती पर स्वर्ग ही बन जाता है। ●

शक्ति का स्वरूप है 'वीर'

वश में की जा सकती है अदृश्य–दृश्य शक्ति तत्व

वीर साधना से

तंत्र विशेषांक में जैसा कि पूज्य गुरुदेव ने स्पष्ट किया था कि मनुष्य की शक्तियों के परे भी महान अदृश्य शक्तियां सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में विचरण करती रहती हैं, और साधना का तात्पर्य है इन शक्तियों को वश में कर अपने शक्ति तत्व के साथ जोड़ देना, तभी साधना का वास्तविक अर्थ है, अन्यथा साधना केवल नित्य कर्म बन कर रह जाती है।

वीर शब्द का शाब्दिक अर्थ बलशाली होता है, लेकिन तांत्रोक्त रूप में वीर का तात्पर्य बिल्कुल अलग है, यह यक्ष का स्वरूप है, जिसके सेवक भूत-प्रेत इत्यादि होते हैं और यक्ष योनि केवल अभिशप्त देवता को ही प्राप्त होती है और जब यक्ष योनि में यह वीर साधकों के कल्याण हेतु कुछ शुभ कार्य सम्पन्न कर लेता है तो उसकी यह शाप योनि समाप्त हो कर पुनः देव योनि प्राप्त हो जाती है, साधना के क्षेत्र में तो इस साधना का सर्वोपरि महत्व है, और तांत्रिक साधना में शिष्य की यह इच्छा रहती है कि उसके गुरु उस पर कृपा कर वीर साधना में सिद्धि दिलाएं।

वीर साधना

वीर साधना का तात्पर्य ऐसी साधना है, जिसे सम्पन्न करने पर वीर आपके वश में हो जाता है, वीर एक ऐसा बलिष्ठ पुरुष है, जो अत्यन्त ही ताकतवर और जीवन भर वश में रह कर काम करने वाला है।

वीर विक्रमादित्य की कहानी सर्वविदित है, कि उन्होंने एक वीर साधना कर रखी थी, और वह वीर हमेशा उनके नियन्त्रण में और उनकी आज्ञा में तैयार रहता था, जब भी जो भी आज्ञा विक्रमादित्य देते, वह वीर एक पल में ही उस कार्य को पूरा कर देता, विक्रमादित्य ने उस वीर की सहायता से ही अपने सारे शत्रुओं

को काबू में किया, इस वीर की सहायता से ही जब राज्य पर पड़ोसी राज्य की फौजें चढ़ आईं तो पूरी फौज का सफाया किया, वीर की सहायता से ही उसने अपने राज्य में अटूट धन सम्पत्ति जोड़ दी और वीर की सहायता से ही विक्रमादित्य पूरे संसार में विख्यात हुए।

रामभक्त हनुमान ने भी वीर साधना सम्पन्न कर रखी थी, इसीलिए उनको **महावीर हनुमान** कहते हैं, इस वीर की सहायता से ही वे चार सौ योजन का समुद्र एक ही छलांग में पार कर सके थे, ऐसे वीर की सहायता से ही वे लंका के अशोक वन को तहस-तहस कर अपनी धाक जमा सके थे, और उस वीर की सहायता से ही बड़े से बड़े पर्वत गेंद की तरह हथेली में लेकर कहीं पर भी फेंक सकते थे।

शंकराचार्य ने भी वीर साधना सम्पन्न कर रखी थी, जिसकी वजह से चौबीसों घण्टे उनकी सुरक्षा बनी रहती थी, वीर की सहायता से ही जब वे जंगल में एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते तो वीर उनका सही मार्ग दर्शन करता, जंगल के हिंसक पशुओं से भी रक्षा वीर ही करता, वीर की सहायता से ही शंकराचार्य ने अकेले पूरे भारतवर्ष से बौद्ध धर्म को समाप्त कर हिन्दू धर्म को स्थापित करने में सफलता पाई, वे स्वयं इस बात को स्वीकार करते थे कि मैंने अपने जीवन में सैकड़ों साधनाएं सम्पन्न की है, परन्तु वीर साधना के द्वारा ही मैंने जीवन की पूर्णता, यश, सम्मान और अद्वितीय सफलता प्राप्त की है।

गुरु गोरखनाथ वीर साधना के आचार्य थे, और उनके शिष्य इस बात का गौरव अनुभव करते थे, कि गुरु गोरखनाथ ने वीर को सिद्ध किया है, जिसकी वजह से वे तन्त्र क्षेत्र में पूर्ण सफलता पा सके हैं, यद्यपि कई लोगों ने मिल कर गुरु गोरखनाथ को मारने की चेष्टा की, परन्तु अकेले गुरु गोरखनाथ सैंकड़ों लोगों से मुकाबला कर सके, और विजय प्राप्त कर सके।

वीर

जिस प्रकार से भूत साधना या शून्य साधना सम्पन्न कर जीवन की प्रत्येक आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है उसी प्रकार से वीर साधना के द्वारा भी संसार का कठिन से कठिन कार्य सम्पन्न किया जा सकता है, **वीर** का तात्पर्य भूत से मजबूत, '**वीर**' का तात्पर्य एक ऐसे महान व्यक्तित्व से है, जो अत्यन्त ही सरल, भलाई करने वाला प्रत्येक प्रकार की मुसीबत में सहयोग देने वाला और अपने मालिक के कठिन से कठिन कार्य को भी चुटकियों में हल करने वाला है।

यह साधना वास्तव में ही अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ रही है, क्योंकि कोई भी गुरु इस प्रकार की साधना को प्रकट करना नहीं चाहता, अपने अन्तिम समय में गुरु अपने शिष्य को ही यह महत्वपूर्ण साधना समझाता और उसे पूर्ण सिद्ध योगी बना देता है।

ऐसे एक दो नहीं कई उदाहरण हैं, जिन्होंने पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में इस साधना को सम्पन्न किया और उसमें सफलता प्राप्त की, किसी को शत प्रतिशत सफलता मिली तो किसी को कुछ कम, कइयों के सामने कार्य की पूर्णता हेतु **वीर** प्रत्यक्ष आकर उपस्थित हुआ तो कई साधकों को अदृश्य रूप से किसी न किसी माध्यम से कार्य में पूर्णता प्राप्त हुई, ऐसे साधकों के पत्र आते हैं कि भयंकर से भयंकर बाधा के समय, जब कार्य की पूर्णता हेतु कोई मार्ग नहीं दिखता, और उन्होंने पूर्ण मनोयोग से वीर साधना सम्पन्न की तो सात दिन के भीतर ही वह बाधा सरल हो गई और कार्य सिद्ध हो गया, उन्हें हर समय यह विश्वास बना रहता है कि **वीर** की अदृश्य शक्ति उसकी बाधाओं का नाश अवश्य कर देगी।

प्रत्येक साधक इस साधना को अवश्य सम्पन्न करें, क्योंकि यह साधना 'जाग्रत साधना' है, शक्ति तत्व को उदय करने की साधना है, अपने कार्यों के सफल होने

के मार्ग में बाधा के निवारण की साधना है, भैरव के स्वरूप की साधना है।

साधना विधि

मैं नहीं चाहता कि कोई भी विद्या गोपनीय रहे, अतः इस देव दुर्लभ साधना को भी पत्रिका पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहा हूं और मुझे विश्वास है कि प्रत्येक पत्रिका पाठक इस साधना को सम्पन्न कर सफलता प्राप्त कर सकेगा, सफलता प्राप्त करने के बाद पत्रिका पाठक को चाहिए कि वह पत्रिका कार्यालय को सफलता की सूचना दे और उन अनुभवों को भी लिखे जो उसे साधना काल में प्राप्त हुए हैं, जिससे कि उन अनुभवों को पत्रिका के अगले अंकों में प्रकाशित किया जा सके।

यह साधना मात्र १४ दिन की है, इस साधना को सम्पन्न करने के लिए निम्न पांच नियमों का पालन करना जरूरी है—

१–किसी भी शुक्रवार से यह साधना प्रारम्भ करें, रात्रि को पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर लाल आसन पर लाल धोती पहन कर बैठ जांय और आधा किलो गेहूं के आटे से मनुष्य की आकृति का पुतला बनावें और उसे सिन्दूर से रंग दें, इसे **'वीर'** कहते हैं, फिर पास में तेल का दीपक लगावें और वीर के पास ही **"वीर प्रत्यक्ष सिद्धि यन्त्र"** स्थापित कर दें।

२–नित्य रात्रि को **"हकीक माला"** से वीर एवं **वीर प्रत्यक्ष सिद्धि यन्त्र** के सामने १५ माला मन्त्र जप करें, इसमें यन्त्र का ही सर्वाधिक महत्व है।

३-साधना की अवधि में ब्रह्मचर्य व्रत से रहें, एक समय भोजन करें, साधना काल में या मन्त्र जप के समय कोई अनुभव हो तो किसी से न कहें।

४–जब साधना सम्पन्न हो जाय तो १५वें दिन उस वीर को दक्षिण दिशा में जंगल में रख कर कहें कि– 'जब मैं तुझे आज्ञा दूं, तू उपस्थित होगा और आज्ञा पालन करेगा, इसके अलावा हर क्षण अदृश्य रूप से मेरे सामने उपस्थित रहेगा तथा मेरी रक्षा करेगा', उस यन्त्र को लाल धागे से अपनी भुजा में [illegible] लें।

५ साधना सम्पन्न होने के बाद जब पांच बार मन्त्र उच्चारण कर वीर को आवाज दी जायेगी तो आंखों के सामने वीर प्रत्यक्ष होगा और उस समय आप उसे जो भी आज्ञा देंगे, वह तुरन्त आज्ञा का पालन करेगा।

इस प्रकार की महत्वपूर्ण साधना में साधक को भय रहित होकर साधना अनुष्ठान सम्पन्न करना चाहिए और इस हेतु अर्थात् साधना पूर्ण रूप से सिद्ध हो इस हेतु गुरुदेव के आशीर्वाद से बढ़ कर साधक के लिए क्या हो सकता है, अतः मन्त्र जप प्रारम्भ करने से पहले एक माला गुरु मन्त्र का जप अवश्य कर लें

गोपनीय वीर मन्त्र

।।ॐ ह्लीं ह्लीं वीराय प्रत्यक्षं भव ह्लीं ह्लां फट्।।

वीर साधना के सम्बन्ध में यदि कोई अन्य जानकारी प्राप्त करना चाहें तो कार्यालय से पत्र व्यवहार कर सकते हैं, अपने पत्र में पूर्ण विवरण अर्थात् अपनी आयु, अपना कार्य, अपनी बाधाएं अवश्य लिखें, साथ ही यह संकल्प भी लिखें कि मैं वीर साधना सम्पन्न करना चाहता हूं, मुझे पूज्य गुरुदेव आशीर्वाद प्रदान करें।

वास्तव में ऐसी अद्वितीय साधना को सम्पन्न कर पूर्ण सफलता प्राप्त करने का सौभाग्य वरदान स्वरूप ही है ●

चैत्र नवरात्रि महोत्सव

(४ अप्रैल ९२ से १० अप्रैल ९२)

शक्ति महोत्सव—सिद्धि महोत्सव

★ शक्ति और सिद्धि परस्पर जुड़े हैं, शक्ति के बिना सिद्धि नहीं, और शक्ति-तत्व जाग्रत हो सकता है केवल साधना तत्व द्वारा ।

★ शक्ति और सिद्धि द्वारा भाग्य तत्व प्रबल होता है, कर्म तत्व पूर्ण फल देता है, जन्म जन्मान्तर के दोषों का निवारण संभव हो जाता है ।

★ शक्ति-सिद्धि एक महान् प्रक्रिया है, आत्म साक्षात्कार की, अपने बल, बुद्धि को पहिचान कर जीवन दिशा निर्धारित करने की ।

★ जीवन में सुख हमेशा दुःख की ऊपरी परत के नीचे छिपे हैं, आवश्यकता है केवल शक्ति-तत्व जाग्रत कर सिद्धि तत्व प्राप्त कर इन दुःखों को हटा कर सुखों को आत्मसात करने की ।

★ परम पूज्य गुरुदेव ने चैत्र नवरात्रि को "सिद्धि महोत्सव" कहा है, क्योंकि शक्ति के इस उत्सव में जाग्रत होकर सिद्धि को साक्षात् रूप से प्राप्त कर इसका अनुभव कर पूर्ण परिवर्तन लाना ही है ।

★ गुरु शक्ति पीठ जोधपुर में इस बार यह अद्भुत "सिद्धि महोत्सव" साधना का नया अध्याय होगा, साक्षात् शक्ति का आह्वान और आगमन होगा ।

★ इस महोत्सव में आना है, सभी शिष्यों को और स्वयं साक्षीभूत हो कर शक्ति की इस क्रिया में सिद्धि की इस प्रक्रिया में सम्मिलित होना है ।

★ केवल अनुभूति प्राप्त नहीं करनी है, स्वयं शक्तिमय जाग्रतमय चैतन्य होना है एक नये जीवन की आधार संरचना करनी है ।

★ इस विराट् यज्ञ में, मां दुर्गा के सिद्धि महोत्सव में जय घोष करना ही है ।

नवरात्रि-पर्व—(४ अप्रैल से १० अप्रैल ९२ तक)

या श्रीः स्वयं स्वकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा शतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
ता त्वां नतास्म परिपालय देवि विश्वम् ।।

जो पुण्यात्माओं के घरों में स्वयं ही लक्ष्मी रूप से, पापियों के यहां दरिद्रता रूप से, शुद्ध अन्तःकरण वाले पुरुषों के हृदय में बुद्धि रूप से, सत्पुरुषों में श्रद्धा रूप से तथा कुलीन मनुष्य में लज्जा रूप से निवास करती हैं। देवी ! विश्व का सर्वथा पालन कीजिये।

जगत् जननी आदि शक्ति जिनके विभिन्न स्वरूप हैं, अपने विभिन्न स्वरूपों में अपने भक्तों का कल्याण करते हुए, इस चराचर जगत में विचरण करती है, जो मनुष्य तो क्या शिव के लिए भी शक्ति है, जिसके बिना ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी अपूर्ण हैं, उस आदि शक्ति का ध्यान न करने वाला, साधना न करने वाला, दुर्भाग्यशाली ही कहा जायेगा, जो जगत् माता भगवती अपने विभिन्न स्वरूपों में कल्याण करती है, जिसके एक-एक स्वरूप की माया निराली है, जो शीघ्र प्रसन्न होने वाली है और अपने भक्तों को अभय प्रदान करती है, जिसका पर्व वर्ष के चार नवरात्रि पर्व हैं, उस देवी मां के आशीर्वाद की कामना करना साधक का कर्त्तव्य है।

शक्ति साधना : सिद्धि परिशिष्ट

नवरात्रि का उत्सव एक महान उत्सव है, जो साधक के लिए कुछ करने का समय है, इस चैतन्य समय में अपने जीवन की न्यूनताओं को दूर करने हेतु और उसमें पूर्णता भरने हेतु साधना का पर्व है।

आगे के पृष्ठों में देवी के २१ प्रधान स्वरूप और उन स्वरूपों में भी जो विभेद हैं, उनकी व्याख्या, ध्यान, शक्ति, मन्त्र, बीज मन्त्र का विवेचन किया जा रहा है आशा है, साधक इन्हें ध्यान से पढ़ते हुए शक्ति के इन स्वरूपों की साधना कर अपने जीवन को उत्तम बनाएंगे—

१-सर्व मंगला, २-चण्डिका, ३-अष्टभुजा काली, ४-प्रत्यंगिरा,
५-अपराजिता, ६-प्राणशक्तिदेवता, ७-तुलसी देवी, ८-चतुर्भुजान्नपूर्णा,
९-शीतला, १०-त्वरिता, ११-विजया, १२-वन दुर्गा,
१३-नित्या—

१४-नव दुर्गा

१-शैल पुत्री, २-ब्रह्मचारिणी दुर्गा, ३-चण्ड-खण्डा दुर्गा, ४-कूष्माण्डा दुर्गा, ५-स्कन्द दुर्गा, ६-कात्यायनी दुर्गा, ७-कालरात्रि दुर्गा, ८-महागौरी दुर्गा, ९-सिद्धि दायिनी दुर्गा ।

१५-अष्ट लक्ष्मी

१-द्विभुजा लक्ष्मी, २-गजलक्ष्मी, ३-महालक्ष्मी, ४-श्रीदेवी, ५-धीरलक्ष्मी, ६-द्विभुजा वीर लक्ष्मी, ७-अष्ट भुजा वीर लक्ष्मी, ८-प्रसन्न लक्ष्मी ।

१६-चतुः षष्टयोगिनी

१-दिव्य योगा, २-महायोगा, ३-सिद्ध योगा, ४-माहेश्वरी, ५-पिशाच्चिनी, ६-डाकिनी, ७-कालरात्रि, ८-निशाचरी, ९-कंकाली, १०-रौद्रवेताली, ११-हुंकारी, १२-भुवनेश्वरी, १३-ऊर्ध्वकेशी, १४-विरुपाक्षी, १५-शुष्कांगी, १६-नरभोजिनि, १७-फट्कारी, १८-वीरभद्रा, १९-धूम्राक्षी, २०-कलहप्रिया, २१-रक्ताक्षी, २२-घोरा राक्षसी, २३-विश्वरूपा, २४-भयंकरी, २५-कामाक्षी, २६-उग्र चामुण्डा, २७-भीषणा, २८-त्रिपुरान्तका, २९-धीरकौमारिका, ३०-चण्डी, ३१-वाराही, ३२-मुण्डधारिणी, ३३-भैरवी, ३४-हस्तिनी, ३५-क्रोधदुर्मुखी, ३६-प्रेतवाहिनी, ३७-खट्वांगदीर्घलम्बोष्टी, ३८-मालती, ३९-मन्त्रयोगिनी, ४०-अस्थिनी, ४१-चक्रिणी, ४२-ग्राहा, ४३-कण्टकी, ४४-काटकी, ४५-शुभ्रा, ४६-क्रियादूती, ४७-करालिनी, ४८-शंखिनी, ४९-पद्मिनी, ५०-क्षीरा, ५१-असंधा, ५२-प्रहारिणी, ५३-लक्ष्मी, ५४-कामुकी, ५५-लोला, ५६-काकदृष्टि, ५७-अधोमुखी, ५८-धूर्जटी, ५९-मालिनी, ६०-घोरा, ६१-कपाली, ६२-विषभोजिनी, ६३-चतुर्मुखी, ६४-वैताली ।

१७-षोडशमातृकाएं

१-गौरी, २-पद्मा, ३-शची, ४-मेधा, ५-सावित्री, ६-विजया, ७-जया, ८-देवसेना, ९-स्वधा, १०-स्वाहा, ११-माता, १२-लोकमाता, १३-धृति, १४-पुष्टि, १५-तुष्टि, १६-आत्म कुलदेवी ।

१८-सप्तघृतमातृकाएं

१-श्री, २-लक्ष्मी, ३-धृति, ४-मेधा, ५-पुष्टि, ६-श्रद्धा, ७-सरस्वती ।

१९-सप्तमातृकाएं

१-ब्राह्मी, २-माहेश्वरी, ३-कौमारी, ४-वैष्णवी, ५-वाराही, ६-ऐन्द्री, ७-चामुण्डा ।

२०-दस ाविद्याएं

१-काली, २-तारा, ३-त्रिपुर सुन्दरी, ४-भुवनेश्वरी, ५-छिन्नमस्ता, ६-त्रिपुर भैरवी, ७-धूमावती, ८-कमला, ९-बगलामुखी, १०-मातंगी ।

त्वरिता शक्ति साधना

सांसारिक सुख, प्रेम, सौन्दर्य, वशीकरण शक्ति

सांसारिक सुख भी अनायास प्राप्त नहीं हो जाते हैं, उसके लिए भी एक साधना का बल, और सिद्धि आवश्यक है, सुख प्राप्त करना और उन सुखों को भोगना भी उतना ही महत्वपूर्ण है, वशीकरण, स्त्री सुख, गृहस्थ अनुकूलता, सुन्दर पत्नी की प्राप्ति हेतु, प्रेम में सफलता हेतु त्वरिता साधना सबसे महत्वपूर्ण साधना कही गई है।

त्वरिता शक्ति स्वरूप में देवी का ध्यान प्रिया रूप में जो षोडश वर्षीय, हाथों में पाश, अंकुश, वरद और अभय मुद्रा धारण किये हुए है जो ऊपर पत्तों के आसन पर निवास करती है, नाग आभूषणों से सज्जित और गुंथे हुए गुंजा फल का हार धारण किए हुए है, वशीकरण शक्ति, मोहिनी शक्ति, अनंग शक्ति प्रदान करने वाली है, उस ऐसी देवी की साधना तत्क्षण फल प्रदायिनी है।

यह साधना किसी भी शुक्रवार को प्रारम्भ कर अगले आठ दिन नित्य रात्रि को सम्पन्न करना है, साधक संकल्प ले कर साधना प्रारम्भ करें प्रतिदिन वह संकल्प अवश्य दोहराएं, इस साधना में केवल दो सामग्री त्वरिता यन्त्र तथा त्वरिता सपर्या, को अपने सामने एक बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर स्थापित करना चाहिए, यन्त्र के सामने तांबे का बना हुआ सर्प अवश्य स्थापित करें और केवल केसर से पूजन करें अपने पूजा स्थान में सुगन्धित पुष्प रखें, ऊनी आसन पर बैठ कर शरीर पर इत्र लगाएं।

इस साधना में चार दिशाओं में चार मयूर पंख स्थापित कर ऊनी आसन पर बैठ कर अपने हाथ में जल ले कर संकल्प लें तथा इत्र का टीका यन्त्र पर लगाएं, सुगन्धित धूप, अगरबत्ती, पूरे समय लगी रहनी चाहिए और स्फटिक माला से पांच माला मन्त्र जप अवश्य सम्पन्न करें।

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं हुं खेचछे क्षः स्त्रीं हूं क्षे ह्रीं फट् ।।

यह क्रम अगले शुक्रवार तक बराबर जारी रहना चाहिए, इस साधना में तीसरे-चौथे दिन साधक को एक अद्वितीय सुगन्ध का अनुभव अपने पूजा स्थान में होता है और देवी त्वरिता अपने सुन्दरतम स्वरूप में साधक के सामने आकर उसे वर प्रदान करती है, पूजा में नित्य नये सुगन्धित पुष्प चढ़ाएं तथा देवी के सम्मुख केवल खीर का प्रसाद (नैवेद्य) अर्पित करें तथा साधना के पश्चात् इसे ग्रहण करें।

इस साधना में प्रयुक्त यन्त्र व सपर्या को साधक पीले कपड़े में बांध कर अपनी जेब में अवश्य रखें, प्रेम, वशीकरण और अनंग शक्ति में उसे अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है। ✶

अष्टभुजा काली शक्ति साधना

शक्ति, संकल्प, बाधा शान्ति साधना

शक्ति साधना के इस कल्प में काली स्वरूप की साधना आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है और इसमें भी सर्वश्रेष्ठ स्वरूप अष्टभुजा काली का है, बाधाओं की शान्ति हेतु चाहे वह कितनी ही विशाल क्यों न हो, अष्टभुजा काली साधना शीघ्र फलदायी रहती है, अष्टभुजा देवी के आठ हाथों में आठ शस्त्र—शंख, चक्र, गदा, कुम्भ, मूसल, अंकुश, पाश और वज्र धारण किये हुए हैं।

काली की साधना जीवन में बाधाओं की पूर्ण शान्ति सहित दुष्ट ग्रहों के दुष्प्रभाव शान्ति, त-प्रेत भय बाधा शान्ति हेतु करना आवश्यक है काली तो शक्ति की विकराल एवं स्पष्ट स्वरूप हैं।

इस साधना को सम्पन्न करने के लिए निम्न तीन पदार्थों की विशेष आवश्यकता रहती है—

१-अष्टभुजा काली यन्त्र, २-उग्रेश्वरी चक्र, ३-आठ कपाल कोटि चक्र बीज।

उपरोक्त तीनों सामग्रियों का क्रमानुसार प्रयोग करना है।

अपने सामने लाल वस्त्र बिछा कर सबसे पहले **अष्टभुजा काली यन्त्र** स्थापित करें, ध्यान रहे कि केवल सिन्दूर और काजल से ही पूजन करना है साधक को लाल वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर आसन बिछा कर साधना सम्पन्न करनी चाहिए, साधना के पूरे समय तेल का दीपक जलते रहना चाहिए।

साधना में प्रयुक्त **उग्रेश्वरी चक्र** अपने हाथ में ले कर जो बाधा की शान्ति करनी हो, वह संकल्प लेना आवश्यक है, उसके पश्चात् दो मिट्टी के दीपक के बीच में इस चक्र को रख कर काले डोरे से बांध देना चाहिए और आठ दिशाओं में **आठ कपाल कोटि चक्र बीज** स्थापित करने चाहिए, विधान के अनुसार अष्टभुजा काली साधना में देवी का ध्यान करते हुए आठ माला मन्त्र जप आवश्यक है, यह साधना कृष्ण पक्ष में रविवार को प्रारम्भ की जा सकती है, पूर्ण साधना में २१ दिन में २१ हजार मन्त्र जप आवश्यक है।

मन्त्र

।। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं अष्टभुजे कालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ।।

मन्त्र जप की पूर्णता के पश्चात् उग्रेश्वरी चक्र **दीपक सहित घर के बाहर गाड़ दें और उस पर भारी पत्थर रख दें तथा** आठों कपाल कोटि चक्र बीज आठ **दिशा में फेंक दें, इस साधना द्वारा भारी से भारी बाधा की शान्ति शीघ्र ही प्राप्त हो जाती है।** ✶

प्रत्यंगिरा साधना

जड़ मूल से नाश कर दीजिए शत्रुओं को, इस प्रबल साधना से

शक्ति के इस स्वरूप की व्याख्या करना साधकों के वश में नहीं है, यह तो आदि शक्ति का सबसे अधिक तीव्र ज्वलनशील स्वरूप है, जब शत्रु बाधा अत्यधिक बढ़ जाय, जब साधक को अपना धन, धर्म और मान का तथा जीवन का संकट आन पड़े तो साधक को प्रत्यंगिरा साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

प्रत्यंगिरा देवी के स्वरूप वर्णन में लिखा है कि—दिगम्बरा, खुले केश, मेघ के समान श्याम वर्ण, हाथों में तलवार, सर्प, डमरू और कपाल धारण किए, शत्रु समूह को ग्रसित करने वाली, शंकर के तेज प्रदीप्त मुख से ज्वाला निकालने वाली देवी प्रत्यंगिरा अपने भक्तों की रक्षा करती है और शत्रुओं का नाश कर देती है।

यह साधना केवल शनिवार को ही सम्पन्न करनी चाहिए, और वह भी अर्द्ध रात्रि के समय जिस विशेष कार्य हेतु यह साधना सम्पन्न करनी है, वह कार्य एक कागज पर अष्टगन्ध से लिख देना चाहिए, शत्रु का नाम, बड़े अक्षरों में लिखना आवश्यक है, इस कागज को अपने सामने रख कर उस पर मध्य में प्रत्यंगिरा यन्त्र स्थापित कर दस दिशाओं में स्थित, दस दिग्पालों का बलि मन्त्र आह्वान करना चाहिए—

बलि मन्त्र

ॐ यो मे (पूर्व) गतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा इन्द्र तं (**देवराजो**) भंजयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिस्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। **इसी प्रकार अन्य दिशाओं में—**

आग्नेय दिशा में— तेजराज	पश्चिम दिशा में— जलराज	ईशान दिशा में — ताराराज
दक्षिण दिशा में— प्रेतराज	वायव्य दिशा में— प्राणराज	ऊर्ध्व दिशा में— गणराज
नैर्ऋत्य दिशा में—रक्षराज	उत्तर दिशा में— प्रजाराज	अधो दिशा में— नागराज

इस प्रकार दस दिशाओं में इन मन्त्रों से बलि देने हेतु दस **'दिग्पाल चक्र'** तथा उस पर दस सुपारी स्थापित कर एक-एक दिशा की ओर हाथ में जल ले कर बलि मन्त्र पढ़ना चाहिए, ऐसा करने से शत्रु द्वारा किये हुए कृत्य नष्ट हो जाते हैं।

अब साधक एक विशेष **पंचरत्न प्रत्यंगिरा माला** से प्रत्यंगिरा मन्त्र की तीन माला का जप उसी स्थान पर बैठ कर सम्पन्न करें—

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं यां कल्पयंतिनोरयः क्रूरांकृत्यां वधूमिव ह्रां
ब्रह्मणा अपनिर्णुदमः प्रत्यवकर्तारमृच्छतु ह्रीं ॐ ॥

साधना के पश्चात् साधक देवी को हाथ जोड़ कर अपने कार्य पूर्ति की प्रार्थना कर स्नान अवश्य सम्पन्न करें, अगले शनिवार को यही प्रयोग इसी रूप में दोहराएं केवल दो शनिवार प्रयोग करने से ही साधक को शत्रुओं के सम्बन्ध में अनुकूल स्थिति प्राप्त होने लगती है, यह प्रयोग अत्यन्त सिद्ध प्रयोग है और भयंकर संकट आने पर ही इसे सम्पन्न करना चाहिए। ★

सिद्ध महालक्ष्मी साधना

सिद्ध महालक्ष्मी की साधना दुःख दारिद्रय नाश हेतु और रुके हुए कार्यों की सिद्धि हेतु सम्पन्न की जाती है, देवी के इस स्वरूप के सम्बन्ध में लिखा है कि श्वेत वस्त्र धारण करने वाली शुभमयी चतुर्भुजा सिद्ध लक्ष्मी, कमल, कलश, बेल और शंख धारण किये हुए, बेल उन्नति प्रतीक है, शंख विजय प्रतीक, कमल धन प्रतीक, कलश पीड़ा का निवारण प्रतीक है।

सिद्ध महालक्ष्मी की साधना साधक को किसी भी बुधवार को प्रातः प्रारम्भ कर १५ दिन तक निरन्तर सम्पन्न करनी चाहिए।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीसिद्धमहालक्ष्मीमन्त्रस्य हिरण्यगर्भऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वती देवताः श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं मम सर्वक्लेशपीड़ापरिहारार्थं सर्वदुःखदारिद्रय-नाशनार्थं सर्वकार्यसिद्धयर्थं च श्रीसिद्धलक्ष्मीमन्त्रजपे विनियोगः।

इस प्रकार संकल्प लेकर ताम्र पात्र में अथवा थाली में **सिद्ध महालक्ष्मी यन्त्र** स्थापित कर यन्त्र को घी, दूध, तथा जल से धो कर स्वच्छ वस्त्र से पौंछ कर स्वस्तिक बना कर मध्य में एक पुष्प रख कर निम्न आसन मन्त्र से आसन देकर **चार शक्ति चक्र** स्थापित करें फिर ग्यारह बत्तियों का दीपक जलाएं, साधक ११ दीपक अलग-अलग भी जला सकते हैं—

आसन मन्त्र

॥ ॐ सिद्ध महालक्ष्मी पद्मपीठाय नमः ॥

पूर्व की ओर मुंह कर बैठें, सामने केवल यन्त्र व चक्र ही स्थापित होने चाहिए तथा लक्ष्मी तस्वीर अथवा चित्र रखें, शास्त्रोक्त कथन है कि केवल शक्कर का नैवेद्य ही महालक्ष्मी को अर्पित करना चाहिए और अब इस सिद्ध महालक्ष्मी देवी का मन्त्र १०८ बार यह जप करना चाहिए, यह केवल **स्फटिक माला** से ही सम्पन्न करें—

सिद्ध महालक्ष्मी मन्त्र

॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धमहालक्ष्म्यै नमः ॥

इसी प्रकार यह विधान १५ दिन तक निरन्तर मन्त्र अनुष्ठान सम्पन्न कर ब्राह्मण भोजन कराएं और संभव हा त ोमन्त्र जप का दशांश हवन करें।

जैसा कि विनियोग में लिखा है, सिद्ध महालक्ष्मी साधना से सर्व क्लेश पीड़ा का परिहार्य होता है, दुःख दारिद्रय का नाश होकर साधक के कार्य सिद्ध होते हैं, इसमें कोई संशय नहीं है, इस मन्त्र को तो साधक नित्य प्रति जप करें तो और भी अधिक उत्तम है। ★

महागौरी दुर्गा साधना

दुर्गा के स्वरूप तीव्र और शान्त दोनों प्रकार के हैं, जहां तामसी कार्यों अर्थात् शत्रु बाधा, भूत-प्रेत आदि दोष निवारण के लिए देवी के स्वरूप चण्डिका, काली, प्रत्यंगिरा इत्यादि की साधना की जाती है, वहीं विभिन्न प्रकार की कार्य सिद्धि, आर्थिक उन्नति हेतु मां दुर्गा के शान्तगौरी स्वरूप की साधना की जाती है, इसी प्रकार जीवन में शान्ति, मानसिक सुख, शुद्धता, पारिवारिक उन्नति, कन्या विवाह, पुत्र-पौत्र प्राप्ति हेतु देवी के महागौरी स्वरूप की साधना की जाती है।

आद्या शक्ति दुर्गा शिव की शक्ति है, महागौरी दुर्गा साधना शिव की साधना के साथ सम्पन्न करनी चाहिए, और किसी भी सोमवार को साधना की जा सकती है, इस साधना में शिव पूजा हेतु बिल्व पत्र आवश्यक है तथा महागौरी की साधना हेतु **तीन त्र्यम्बक गौरी रुद्राक्ष, मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त महागौरी दुर्गा यन्त्र तथा रुद्राक्ष बीज माला** आवश्यक है।

साधक अथवा साधिका श्वेत वस्त्र धारण करें, अपने सामने शिव तथा महागौरी का चित्र स्थापित कर एक ताम्र पात्र में अपने सामने पूजा में प्रयोग आने वाला शिवलिंग जल से धो कर स्थापित करें उस पर (ॐ नमः शिवाय) **मन्त्र का उच्चारण करते हुए ग्यारह बिल्व पत्र अर्पित करें तत्पश्चात् महागौरी दुर्गा का ध्यान तथा आह्वान करते हुए** महागौरी दुर्गा यन्त्र **स्थापित कर कुंकुम, केसर, अबीर, गुलाल, सुगन्ध अर्पित करें तथा महागौरी का ध्यान करते हुए अपने हाथ में जल ले कर सुख, शान्ति, श्रेष्ठ वर प्राप्ति, पुत्र प्राप्ति, संतान विवाह, इत्यादि का जो भी संकल्प हो, वह बोल कर जल भूमि पर छोड़ दें।**

अब इक्कीस बार महागौरी के निम्न आह्वान मन्त्र का उच्चारण करें—

आह्वान मन्त्र

।। ॐ सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते ।।

अब इस मन्त्र का इक्कीस बार जप करने के साथ ही महागौरी यन्त्र को अपने दोनों हाथों से एक त्र्यम्बक गौरी रुद्राक्ष दूध से धो कर अर्पित करें, महागौरी का और शिव का संयुक्त फलदायक यह रुद्राक्ष दोनों ओर से ढका होता है, तथा महागौरी का प्रिय फल है, अब साधक देवी को एक कटोरे में दूध का नैवेद्य अर्पित करें तथा मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **मूंगा मणि रुद्राक्ष बीज माला** से निम्न बीज मन्त्र की पांच माला का जप उसी स्थान पर बैठ कर करें—

बीज मन्त्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महागौरी विद्महे शिवशक्ति धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ।।

इस सोमवार के दिन साधक साधिका व्रत अवश्य रखें, केवल दूध अथवा फलाहार ग्रहण करें, किसी प्रकार का तामसी व्यवहार न करें, अगले दो सोमवार को इस प्रयोग को इसी रूप में सम्पन्न करते हुए दूसरा तथा तीसरा **त्र्यम्बक गौरी रुद्राक्ष** अर्पित करें, तीन सोमवार के बाद तीनों त्र्यम्बक गौरी रुद्राक्ष को एक सफेद डोरे में बांध कर धारण कर लें अथवा अपने शरीर के स्पर्श अवश्य कराएं।

इस साधना द्वारा कुंवारी कन्याओं को इच्छानुसार वर प्राप्ति होती है, निःसंतान दम्पत्तियों को संतान प्राप्ति होती है, कलह युक्त परिवार में शान्ति स्थापित होती है, महागौरी दुर्गा की शान्त महिमा तो अपार है। ★

प्रसन्न लक्ष्मी साधना

यश, धन, स्वर्ण प्राप्ति की साधना

देवी के महालक्ष्मी स्वरूप में प्रसन्न लक्ष्मी का स्थान सर्वोपरि है, धन की इच्छा रखने वाले साधक को नित्य प्रति प्रसन्न लक्ष्मी की वन्दना अवश्य करनी चाहिए, यह देवी स्वरूप विष्णु की शक्ति है, और शीघ्र प्रसन्न हो कर साधक को अतुल धन प्रदान करने वाली हैं।

वरिवश्या रहस्य ग्रन्थ जो कि भाष्कर राय द्वारा रचित है तथा **शक्ति सिद्धान्त मंजरी** ग्रन्थ में लिखा है, कि रंक से राजा केवल प्रसन्न लक्ष्मी साधना से ही तथा प्रसन्न लक्ष्मी कृपा से ही संभव है।

यह साधना केवल शुक्ल पक्ष में ही चतुर्थी से पूर्णिमा तक सम्पन्न की जानी चाहिए, तथा देवी के स्वरूप में लिखा है कि प्रसन्न लक्ष्मी परमकल्याणमयी, शुद्ध स्वर्ण की आभा वाली, तेज स्वरूपा सुनहरे वस्त्र धारण करने वाली, आभूषणों से सुशोभित, अपने हाथों में स्वर्ण घट, स्वर्ण कमल, निम्बू तथा वर मुद्रा धारण किये हुए विष्णु की शक्ति है और जो साधक यह साधना सम्पन्न करता है, उसके जीवन में प्रसन्न लक्ष्मी कृपा से धन की वर्षा सी होने लगती है।

इस साधना में तीन वस्तुएं प्रधान हैं— **१-स्वर्णाकर्षण लक्ष्मी चक्र, २-प्रसन्न लक्ष्मी महायन्त्र, ३-रत्नकल्प मुद्रिका,** इन तीनों पदार्थों का अलग-अलग उपयोग है, जहां यन्त्र साधना का प्रधान तत्व है, वहां **स्वार्णाकर्षण-चक्र** कार्य सिद्धि का शक्ति तत्व है, और **रत्नकल्प मुद्रिका** आकस्मिक धन प्राप्ति की शक्ति तत्व प्रसन्न लक्ष्मी फल है।

इस साधना में चतुर्थी के दिन अपने पूजा स्थान में पीला वस्त्र बिछा कर यह सामग्री स्थापित करें, साधक स्वयं भी पीले वस्त्र धारण करें तथा स्वर्ण आभूषण धारण कर पूजा सम्पन्न करें, स्त्री साधिका सुन्दर सुनहरी साड़ी तथा अपने सभी आभूषण धारण कर प्रसन्न लक्ष्मी साधना करें।

प्रसन्न लक्ष्मी साधना में देवी का पूजन केवल केसर, इत्र तथा सुगन्धित पुष्पों से करें, साधक पूर्व की ओर मुंह कर अपने सामने सामग्री की स्थापना कर तीन घी के दीपक अवश्य लगाएं।

इस साधना में चतुर्थी से पूर्णिमा पर्यन्त १२ दिन में सवा लाख मन्त्र जप आवश्यक है।

मन्त्र

।। ॐ ग्लौं श्रीं धन्नं मह्य धन्नं मे देह्यन्नाधिपतते ममान्नं प्रदापय स्वाहा श्रीं ग्लौं ॐ ।।

प्रसन्न लक्ष्मी महायन्त्र को मध्य में स्थापित कर बांई ओर स्वर्णाकर्षण लक्ष्मी चक्र तथा दायीं ओर रत्न-कल्प मुद्रिका स्थापित करनी है, प्रत्येक के आगे एक-एक घी का दीपक जलाएं, मन्त्र जपते समय दीपक बुझने नहीं चाहिए, प्रतिदिन नये पुष्प लाएं तथा १२ दिन का अनुष्ठान पूर्ण होने पर लक्ष्मी चक्र को पीले कपड़े में सिलाई कर गले अथवा बांह पर बांध दें, तथा रत्नकल्प मुद्रिका धारण कर लें।

प्रसन्न लक्ष्मी कर्मयोगी साधक पर उसकी भक्ति से, उसकी साधना से शीघ्र प्रसन्न होकर प्रत्यक्ष दर्शन देकर वर सहित इच्छित फल प्रदान करती है। ●

शुद्ध वैदिक पद्धति से

नवरात्रि पूजन विधान

गृहस्थ साधकों हेतु

वर्ष में चार नवरात्रि महत्वपूर्ण मानी गई हैं जो कि चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा, आश्विन शुक्ल प्रतिपदा तथा माघ-शुक्ल प्रतिपदा से अष्टमी पर्यन्त तिथियों को नवरात्रि शब्द से सम्बोधित किया गया है, इसमें आषाढ और माघ की नवरात्रि गुप्त नवरात्रि कहलाती है जो कि तांत्रिकों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है, चैत्र और आश्विन नवरात्रि को प्रकट नवरात्रि कहते हैं जिसका पूरे विश्व में महत्व है, इनमें भी चैत्र नवरात्रि का सर्वाधिक महत्व माना गया है।

इस वर्ष नवरात्रि ४-४-९२ से प्रारम्भ हो रही है, इस नवरात्रि का विशेष महत्व है, और पूरे विश्व में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होने वाली नवरात्रि को अत्यन्त सम्मान के साथ देखा जाता है, इसके कई कारण हैं, प्रथम तो यह कि इस दिन से नया वर्ष प्रारम्भ होता है, द्वितीय संवत्सर का प्रारम्भ भी इसी तिथि से प्रारम्भ होता है, तृतीय यह नवरात्रि सकाम्य नवरात्रि कहलाती है, जिस व्यक्ति को भी यदि किसी प्रकार की कामना होती है, चाहे वह अर्थ प्राप्ति से सम्बन्धित हो, रोग मुक्ति, कर्ज उतारना, शीघ्र विवाह, व्यापार वृद्धि या अन्य किसी भी प्रकार की कामना हो तो इस नवरात्रि में देवी साधना करने से निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

नवरात्रि पूजन के कई उपाय हैं, कई प्रयोग हैं, और कई तरीके हैं, परन्तु जो साधक गुरु के घर नहीं जा सकते या गुरु के सान्निध्य में बैठ कर

समय अर्थात् शाम को ही भोजन करना चाहिए, रात में भूमि शयन करता हुआ नवरात्रि के अन्त में यथोचित दान आदि दे कर प्रकट रूप में गुरु-पूजन सम्पन्न करने से ही उसके मनोरथ सिद्ध होते हैं।

भूमो शयीत चामन्त्र्य कुमारी–
भंजयेन्मुदा ।
वस्त्रालंकारदानैश्च सन्तोष्या–
प्रतिवासरम् ॥

—देवीपुराण

नवरात्रि साधना के लिए देवी पुराण में स्पष्ट आलेख है कि साधना तभी सफल हो पाती है, जब साधना के बाद नित्य प्रकट गुरु पूजन सम्पन्न करें, ऐसा करने पर गुरु नित्य उसकी गलतियों को सुधारते रहते हैं और नित्य शाम को अपने चरणों का स्पर्श करा कर आशीर्वाद देते हुए अपनी तपस्या का अंश प्रदान करते रहते हैं, जिससे उसके शरीर के चक्र जागृत होते हैं, और देवी साधना में सफलता प्राप्त होती है।

साधना सम्पन्न नहीं कर सकते, वे घर पर इस साधना को सम्पन्न कर सकते हैं, उनके लिए वैदिक नवरात्रि पूजन प्रयोग ही अनुकूल है।

नवरात्रि व्रत करने वालों को नौ दिन तक केवल एक

'देवी भागवत' में तो स्पष्ट कहा गया है, कि यदि साधक गुरु के समीप रह कर, चैत्र नवरात्रि में कामना सहित साधना करता है, तो उसे अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है, उच्चकोटि के योगी और संन्यासी भी सूक्ष्म शरीर से गुरु के समीप रह कर

ही साधनाएं सम्पन्न करते हैं ऐसा करने पर उन्हें भगवती दुर्गा के जाज्वल्यमान स्वरूप के दर्शन हो जाते हैं।

फिर भी यदि कोई साधक गुरु के समीप न पहुंच सके तो शुद्ध वैदिक पद्धति से चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अर्थात् ४-४-९२ से निम्न प्रकार से पूजन कर मन्त्र जप प्रारम्भ करें।

प्रातः जल्दी उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर लाल आसन बिछा दें, सबसे पहले अपना नित्य पूजा सम्पन्न कर अपने आराध्य सद्गुरुदेव से नवरात्रि पूजन का संकल्प सम्पन्न करें, जिस रूप से भी गुरु पूजन की जानकारी हो उस रूप से गुरु पूजन कर गुरु मन्त्र की १ माला का जप अवश्य करें।

पूजन के समय अपनी पत्नी को अपने दाहिने हाथ की ओर बिठाएं, जैसा कि मैंने ऊपर शीर्षक में लिखा है कि यह प्रयोग गृहस्थ व्यक्तियों के लिए है, इसका तात्पर्य यह है कि जिस व्यक्ति ने संन्यास ग्रहण नहीं किया हो वह गृहस्थी ही है, अर्थात् गृहस्थ में रहता है, चाहे माता-पिता के साथ ही रहता हो या अविवाहित हो, उन सब के लिए यह पूजन मान्य है।

साधना सामग्री

इस साधना हेतु तीन साधनात्मक मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री आवश्यक है—**१-मन्त्र सिद्ध सकाम्य साफल्य दुर्गार्चन यन्त्र, २-नवरात्रि सिद्धि नवग्रह यन्त्र, ३-षष्टादश देवी साफल्य चक्र,** इन तीनों सामग्री का क्रमानुसार जो प्रयोग है वह मैं आगे स्पष्ट करूंगा, इसके अतिरिक्त पूजन हेतु निम्न पूजन सामग्री की व्यवस्था भी पहले कर लें जिससे कि पूजन प्रारम्भ कर बीच में उठना न पड़े, शास्त्रोक्त विधान है कि संकल्प मन्त्र पढ़कर पूजन प्रारम्भ कर देते हैं तो उसके पश्चात् साधक को अपना आसन पूजन पूर्ण होने से पहले नहीं छोड़ना चाहिए—

१-जल पात्र, २-नारियल, ३-चावल, ४-कुंकुम, ५-मौली, ६-गोलसुपारी, ७-दूध, ८-दही, ९-घी, १०-शहद, ११-शक्कर, १२-गुलाल, १३-लौंग इलायची, १४-फल, १५-दूध का बना प्रसाद, १६-दक्षिणा।

सर्वप्रथम अपने सामने एक लकड़ी के तख्ते पर मध्य में चावलों की ढेरी पर कलश स्थापित करें, पूरे नवरात्रि के दौरान कलश इसी स्थान पर स्थापित रहेगा, फिर एक दूसरे तख्ते पर चावलों की नौ ढेरियां बनाकर मध्य में **नवरात्रि सिद्धि नवग्रह यन्त्र** की स्थापना करें, और अपने सामने भगवती दुर्गा का सुन्दर चित्र फ्रेम में मढ़ाकर स्थापित करें, अब कलश के पास **सकाम्य साफल्य दुर्गार्चन यन्त्र** स्थापित करें, तथा पूजन प्रारम्भ करें सबसे पहले हाथ में जल लेकर संकल्प लें —

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्री श्वेत वाराह कल्पे जम्बू द्वीपे भारतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे सम्वत् २०४९ चैत्रमासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदा तिथौ शनिवासरे (अमुक) गोत्रोत्पन्नो (**अपने गोत्र का उच्चारण करें यदि गोत्र न ज्ञात हो तो कश्यप गोत्र मानें**) (अमुक) नाम शर्माहं (**यहां पर अपने नाम का उच्चारण करें**) मम इह जन्मनि दुर्गाप्रीतिद्वारा चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्धयर्थं (**यहां अपनी विशेष मनोकामना उच्चारित करें**) चैत्र नवरात्रे प्रतिपदायां दुर्गापूजन मन्त्र जप करिष्ये।।

इसके बाद अपने सामने गणपति का चित्र या उनकी मूर्ति स्थापित करें और उस पर जल चढ़ा कर पोंछ लें, कुंकुम का तिलक करें, भोग लगावें और फिर हाथ जोड़ कर मंगल कामना करें—

सुमुखश्चैवदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।१।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।२।।
विद्यारम्भे विवाहे च विदेशगमने तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।।३।।

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत सर्वविघ्नोपशान्तये ।।४।।
सर्व मंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते ।।५।।

मंगल पाठ करने के बाद सामने रखे हुए कलश का पूजन करें, उस पर कुंकुम या केसर की नौ बिन्दियां लगावें, स्वस्तिक का चित्र अंकित करें, कलश के अन्दर एक सुपारी तथा एक रुपया डालें, कलश के ऊपर लाल वस्त्र लपेट कर नारियल रखें और उस पर अबीर गुलाल चढ़ा कर कलश के अन्दर जल डालें और फिर हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें —

सरित: सागरा: सकलास्तीर्थानि जलदा नदा: ।
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारक: ।।१।।
कलशस्य मुखे विष्णु कण्ठे रुद्र: समाश्वित: ।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्येतातृगणा स्मृता ।।२।।
कुक्षो तु सागरा: सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदो यजुर्वेद: सामवेदोप्यथर्वण ।।३।।
अंगैश्च सहिता: सर्व कलशं तु समाश्रिता: ।
देवदानव संवादे मध्यमाने महोदधौ ।।४।।
उत्पन्नोऽसि तदाकुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ।
त्वत्त: सर्वाणितीर्थानि देवा: सर्वे त्वयि स्थिता ।।५।।

तत्पश्चात् **नवग्रह यन्त्र** का पूजन करें, अपने बांएं हाथ में अक्षत लेकर निम्न क्रम से मन्त्र जप करते हुए अक्षत नवग्रह यन्त्रों पर डालें—

ॐ सूर्याय नम: ॐ सोमाय नम:
ॐ भौमाय नम: ॐ बुधाय नम:
ॐ बृहस्पताय नम: ॐ शुक्राय नम:
ॐ शनिश्चर्यै नम: ॐ राहवे नम:
ॐ केतव्ये नम: ।।

इसके बाद **नवग्रह यन्त्र** पर अक्षत, कुंकुम, पुष्प आदि चढ़ा कर हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें—

**ब्रह्मामुरारी त्रिपुरान्तकारी भानु: शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्र: शनि-राहु केतव: सर्वे ग्रहा शान्तिकरा भवन्तु ।।**

इसके बाद सामने जो भगवती दुर्गा की तस्वीर स्थापित की है, उसे जल एवं केसर से पूजन कर उसके सामने **१६ देवी साफल्य चक्र** स्थापित करें, इन पर कुंकुम, केसर की टीकी लगाएं, ये १६ चक्र देवी में स्थित निम्न १६ देवियों के सिद्ध साफल्य स्वरूप हैं—

१-गौरी, २-पद्मा, ३-शची, ४-मेधा, ५-सावित्री, ६-विजया, ७-जया, ८-देवसेना, ९-स्वधा, १०-स्वाहा, ११-मातरो, १२-लोकमातरा:, १३-धृति, १४-पुष्टि, १५-तुष्टि, १६-कुलदेवी ।

फिर हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें—

ते सम्मता जनदेषु धनानि तेषां ।
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्ग: ।।
धन्यास्त एव निभृतात्मज भर्त्यदारा ।
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ।।
जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गाक्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ।।
आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिसूधनि ।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शकरप्रिये ।।

इसके पश्चात् सामने पात्र में रखे हुए यन्त्र की जल से कुंकुम तथा केसर से पूजा करें तथा अन्य सभी सामग्री प्रसाद, मौली, सुपारी, पंचामृत, फल इत्यादि अर्पित कर पूजन करें, तथा अपने मन की इच्छा व्यक्त कर निम्न नवार्ण मन्त्र की पांच माला जप सम्पन्न करें

नवार्ण मन्त्र

।। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ।।

अब निम्न प्रार्थना सम्पन्न करते हुए मां दुर्गा से अपनी भूलों की क्षमा याचना करते हुए निम्न प्रार्थना सम्पन्न कर यह पूजन पूर्ण करें—

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
मया यत्पूजितं देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ।।
महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्ड मालिनी ।
यशो देहि जयं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ।।

आयुर्वेद अपनाइये

बीमारियों को जड़-मूल से नष्ट कीजिये

आजकल हर छोटी से छोटी बीमारी अर्थात् सामान्य ज्वर, सिर-दर्द, फोड़े-फुन्सी, होने पर भी डाक्टर के पास भागने का रिवाज बन गया है, एलोपैथिक गोलियां बीमारी को जड़ से मिटाती नहीं हैं, बल्कि रोग को शरीर के भीतर ही दबा देती हैं जिससे अन्य बीमारियों की उत्पत्ति होती है।

आयुर्वेद सबसे अधिक शुद्ध एवं प्रामाणिक विज्ञान है, आप एक बार अपना कर तो देखिए, भूल जाएंगे अपने डाक्टर को और तरह-तरह की गोलियां, इन्जेक्शन तथा यंत्रणा—

आयुर्वेद के सैकड़ों ग्रन्थ उपलब्ध हैं, जिनमें कुछ नकली भी हो सकते हैं, परन्तु जो प्रामाणिक ग्रन्थ हैं, उनमें बताये हुए प्रयोग अपने आपमें मौलिक और महत्वपूर्ण हैं, इन ग्रन्थों में – **सुश्रुत आयुर्वेद, अष्टांग हृदय, चरक संहिता, भाव प्रकाश, योग रत्नाकर माधव निदान, कश्यप संहिता, सारंगधर संहिता, रस तन्त्र सार** आदि हैं, जिस प्रकार से ये ग्रन्थ महत्वपूर्ण हैं, उसी प्रकार से उच्च कोटि के आयुर्वेदज्ञ भी भारतवर्ष में हुए हैं, जिन्होंने पूर्ण प्रसिद्धि, सम्मान और यश अर्जित किया है, ऐसे ही विद्वानों में **अग्निवेश मुनि** महत्वपूर्ण हैं, उन्होंने कई ग्रन्थ लिखे हैं, जिनमें उनका **निदानांजन** अत्यन्त महत्वपूर्ण है, यह हस्तलिखित ग्रन्थ है, और इसमें जो भी प्रयोग दिये हैं वे अपने आपमें अत्यधिक विश्वसनीय, महत्वपूर्ण और दुर्लभ हैं।

आगे कुछ महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक प्रयोग दिये जा रहे हैं, जिन्हें बिना किसी हिचक के सम्पन्न कर पूर्ण निदान प्राप्त कर सकते हैं—

ज्वर

ज्वर से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण प्रयोग दिया है, इसके द्वारा किसी भी प्रकार का ज्वर समाप्त हो जाता है, यद्यपि देखने में यह नुस्खा अत्यन्त ही सामान्य प्रतीत होता है, परन्तु मैंने इसका प्रयोग कई बार किया है और हर बार मुझे इसमें सफलता ही मिली है।

मारिचेन समरिचेन समायुक्तास्तुलसी पत्रजो रसः ।।
द्रोणपुष्पीरसो वापि विषमज्वरनाशनः ।।

अर्थात् दो तोला तुलसी के पत्तों का रस लेकर उसमें दस माशा भर काली मिर्च का बारीक पाउडर मिला कर दिन में दो बार सेवन किया जाय तो किसी भी प्रकार का बुखार समाप्त हो जाता है।

मन्दाग्नि

कई व्यक्तियों को भली प्रकार से भोजन पचता नहीं या डकारें आती रहती हैं, पेट फूल जाता है और खाना हजम नहीं होता, फलस्वरूप उनका शरीर कमजोर पड़ता रहता है, तथा गैस्टिक ट्रबल होने की वजह से जीवन भार स्वरूप हो जाता है।

शिवाग्निपिप्पली पथ्या सैन्धवानां विचूर्णितम् ।
दीपनं पाचनं रुच्यं ज्वरनुत् श्लेष्मनुत् सदा ।।

अर्थात् आंवला, चित्रक, पीपर, हरड़ और सेन्धा-नमक बराबर मात्रा में लेकर इसका चूर्ण बना लें, नित्य सुबह-शाम आधा तोला चूर्ण गर्म पानी के साथ लिया जाय तो उसकी जठराग्नि तेज हो जाती है भूख बढ़ जाती है और शरीर में ताकत, चुस्ती और स्फूर्ति आ जाती है।

खांसी

खांसी कई कारणों से हो सकती है, मगर यह प्रयोग प्रत्येक प्रकार की खांसी के लिए उपयोगी है।

वासांशुंठीकणाचूर्णं मधुना कासनाशनम् ।
सवचा सकणा शुंठी वासा तद्वत् कवोष्णकः ।।

अर्थात् अरंडू, सूंठ और पीपर का चूर्ण बनाकर नित्य डेढ़ माशा चूर्ण शहद के साथ लिया जाय तो प्रत्येक प्रकार की खांसी समाप्त हो जाती है।

आधाशीशी

यों तो सिर का रोग अपने आपमें दुःखदायक होता ही है, पर इसमें भी आधाशीशी रोग अत्यधिक परेशानी करने वाला तथा दुःख देने वाला माना गया है इसके लिए इस पुस्तक में महत्वपूर्ण प्रयोग दिया है जो निम्न प्रकार है।

नस्यन्तु सैन्धवोपेतं सर्पिष्यामि च तद्रसम् ।।

अर्थात् घी के साथ सेन्धा नमक बारीक पीसकर उसे नाक में हवा के साथ ऊपर खींचें तो निश्चय ही आधा शीशी रोग मिट जाता है, यह प्रयोग भी मेरा आजमाया हुआ है, और उपयोगी है।

प्रदर

जिस स्त्री को भी प्रदर या सफेद पानी की बीमारी हो जाती है, उसका शरीर कमजोर हो जाता है और कुछ दिनों में ही मृत्यु हो जाती है, इसके लिए एक महत्वपूर्ण प्रयोग पुस्तक में है—

तण्डुलोदकसंपिष्टं त्वक्क्षीरी नागकेसरम् ।
हिमवालुकसंयुक्तं नाशयेत् प्रदरं द्रुतम् ।।

अर्थात् वंशलोचन, नागकेसर और शुद्ध कपूर इन तीनों को बराबर मात्रा में ले कर चावलों के धोवन के साथ पीस कर यदि स्त्री उसे पिये तो सभी प्रकार का प्रदर रोग समाप्त हो जाता है।

आयुर्वेद में मुख्यतः तीन ही बीमारियां मानी जाती हैं, जिसे १-वात, २-पित्त, ३-कफ माना गया है, बाकी सभी बीमारियां इन तीन कारणों से ही होती हैं, ऊंचे से ऊंचे आयुर्वेदज्ञों ने भी यही कहा है, कि यदि बीमारी की प्रकृति पहिचान कर यदि इन वात, पित्त और कफ की चिकित्सा कर दी जाय तो

इनसे सम्बन्धित सारी बीमारियां स्वतः समाप्त हो जाती हैं ।

नीचे मैं तीनों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण औषधियां स्पष्ट कर रहा हूं ।

वात चिकित्सा

गुडुचीपिप्पलीमूलनागरैः पाचनं स्मृतम् ।
दद्याद्वातज्वरे पूर्णे लिंगे सप्तवासरे ।।

अर्थात् गुड़, पीपरामूल और सोंठ– ये तीनों बराबर मात्रा में लेकर सोलह गुना पानी में पकावें और जब पानी आठ तोला रह जाय तब उस पानी का नित्य थोड़ा-थोड़ा सेवन करें, तो वात से सम्बन्धित सभी बीमारियां स्वतः समाप्त हो जाती हैं ।

पित्त चिकित्सा

द्राक्षया त्रिफलया त्रिवृत्ता च संसृनेन रुधिरस्त्रुतिभिश्च ।
सर्पिदा च पयास सितया च स्वादुना भवति पित्तनिवृत्ति ।।

अर्थात् दाख, हरड़, बहेड़ा, आंवला इन सब को बराबर मात्रा में ले कर डेढ़ सेर पानी में पकावें, जब चौथाई हिस्सा पानी रह जाय तब उसे नित्य थोड़ा-थोड़ा सेवन करें, तो पित्त से सम्बन्धित सभी रोग निश्चय ही समाप्त हो जाते हैं ।

कफ चिकित्सा

आरग्वघकणामूलस्तातिक्ताभयाकृतः ।
क्वाथः क्षपयति क्षिप्रं ज्वर वातकफोद्भवम् ।।

अर्थात् मेथी, पीपरामूल और हरड़, इन औषधियों को बराबर मात्रा में लेकर एक सेर पानी में पकावें और जब चौथाई पानी रह जाय तो उस पानी को छान कर साफ शीशी में रख लें, अब नित्य इसे थोड़ा-थोड़ा सेवन करें तो कफ से सम्बन्धित सभी बीमारियां समाप्त हो जाती हैं ।

आयुर्वेद चिकित्सा से इन प्रयोगों को अपना कर तो देखिये, रोग का नामोनिशान ही नहीं रहेगा, यदि प्रति-दिन नियमित रूप से योगासन, व्यायाम तथा सूर्य नमस्कार एवं मुद्रा क्रियाएं सम्पन्न की जांय तो रोग पास फटक ही नहीं सकते हैं ।

फार्म नं०-४, नियम-८ देखिए

१-प्रकाशन स्थान–जोधपुर । २-अवधि–मासिक । ३, ४, ५-मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक नाम-योगेन्द्र निर्मोही । क्या भारत का नागरिक है ? –हां । पता–द्वारा मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर । ६-उन व्यक्तियों के नाम और पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हैं, तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों– डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली, कैलाशचन्द्र श्रीमाली तथा अरविन्द श्रीमाली द्वारा मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

मैं योगेन्द्र निर्मोही एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार दिया गया विवरण सत्य है ।

—प्रकाशक–योगेन्द्र निर्मोही

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

साधनाओं में सफलता प्राप्त करने के लिए कुछ विशिष्ट उपकरणों की आवश्यकता होती है, अतः प्रस्तुत अंक में जिन साधनाओं का विवरण दिया गया है उनसे सम्बन्धित चैतन्य, मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सामग्री, साधकों की सुविधा के लिए उचित मूल्य पर उपलब्ध कराने हेतु कार्यालय ने व्यवस्था की है।

आप केवल पत्र द्वारा सूचित कर दें कि आपको कौन-कौन सी सामग्री चाहिए हम डाक व्यय लगा कर, वह सामग्री वी०पी० द्वारा भेजने की व्यवस्था कर देंगे, जिससे सामग्री आपको उचित समय पर सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सकेगी।

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
श्री निखिलेश्वरानन्द साधना	५	दिव्यौघ गुरु यन्त्र	१५०)रु०
		गुरु तत्व गुटिका	१५०)रु०
		गुरु सिद्धि माला	२४०)रु०
बजरंग बली हनुमत् साधना	११	हनुमान साधना सिद्धि पैकेट	३००)रु०
		रुद्राक्ष माला	१५०)रु०
		हनुमान मुद्रिका	६०)रु०
दो साधनाएं जो आपका जीवन बदल सकती हैं	१७	—	
—अन्नपूर्णा साधना	१७	अन्नपूर्णा साधना सामग्री पैकेट	२४०)रु०
—विंध्यवासिनी साधना	१६	विंध्यवासिनी यन्त्र	१५०)रु०
		स्फटिक माला	८०)रु०
वीर साधना	२१	वीर प्रत्यक्ष सिद्धि यन्त्र	२१०)रु०
		हकीक माला	११०)रु०
नवरात्रि साधनाएं —	२५	—	
—त्वरिता साधना	२७	त्वरिता साधना पैकेट	१८०)रु०
—अष्टभुजा काली साधना	२८	अष्टभुजा काली साधना पैकेट	१८०)रु०
—प्रत्यंगिरा साधना	२६	प्रत्यंगिरा साधना पैकेट	२४०)रु०
—सिद्ध महालक्ष्मी साधना	३०	सिद्ध महालक्ष्मी साधना पैकेट	२१०)रु०
—महागौरी दुर्गा साधना	३१	महागौरी दुर्गा साधना पैकेट	२४०)रु०
—प्रसन्न लक्ष्मी साधना	३२	प्रसन्न लक्ष्मी साधना पैकेट	१८०)रु०
वेदोक्त नवरात्रि साधना	३३	वेदोक्त नवरात्रि साधना पैकेट	३००)रु०

जिसने भी शिष्य भाव ग्रहण किया है, पूज्य गुरुदेव से दीक्षा ली है, उसका तो कर्त्तव्य हो जाता है, कि वह इस महोत्सव पर पहुंचे और अपनी भक्ति का साक्षात् समर्पण भाव प्रस्तुत कर गुरुदेव के सान्निध्य में अपने मन की गांठें खोल कर रख दे, गुरु भाव में एकाकार हो जाय।

इसीलिए यह उत्सव शिवमहोत्सव, लक्ष्मी उत्सव है, साबर सिद्धि दिवस है, गुरु आशीष कल्प है, यह उत्सव जीवन की सहस्र धाराओं का संगम उत्सव है, जहां हर शिष्य को हर साधक को पहुंचना ही है।

आदि व्याधि, जरा, पीड़ा, मृत्यु, भय, शोक, दुःख के पूर्ण निवारण हेतु सभी शिष्यों के साथ एक संकल्प में २१ अप्रैल को आयोजन होगा महारुद्र यज्ञ का, जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है और इस महारुद्र यज्ञ में साक्षी होना है आप सबको।

इसके आयोजन की जिम्मेदारी सभी शिष्यों की है, यह याद रहे, क्योंकि यह कार्य तो सबको मिल कर सर्वोत्तम रूप से सम्पन्न करना है।

इस आयोजन में गुजरात से शिष्यों ने विशेष जिम्मेदारी ली है और आप व्यवस्था आदि के सम्बन्ध में, आने-जाने के सम्बन्ध में रिजर्वेशन हेतु इन गुरु भाइयों से अथवा जोधपुर कार्यालय से सम्पर्क करें—

श्री केवल सिंह रूप सिंह बारीया
मु०पो०-वंदेली, ता०-गोधरा, सन्त रोड
जिला-पंचमहल-३८९००१ (गुजरात)

रतिलाल के टेलर
९५ कृष्ण नगर, बामरोली रोड, गोधरा
जिला-पंचमहल (गुजरात)

प्रवीण बी जोशी
सी-३, कस्तूरी नगर, श्रेयस स्कूल के पीछे
मांझलपुर नाका, बड़ौदा-३९०००१ (गुजरात)

डॉ० अर्जुन सिंह एम. बारीया
द्वारा उदेसिंह एम. बारीया
जागृति हाईस्कूल कुवाझर
मु०पो०-कुवाझर ता०-गोधरा
जिला-पंचमहल-३८५१२० (गुजरात)

श्री नागजी भाई के पटेल
बंगला नं० १६४,
संत जलाराम सोसायटी
वेड रोड, सूरत-४ (गुजरात)

बम्बई-दिल्ली मुख्य रेलवे मार्ग पर गोधरा स्टेशन है।

अहमदाबाद से १४३ कि०मी० बड़ौदा से ७० कि०मी० की दूरी पर गोधरा आया हुआ है।

दिल्ली या बम्बई से हवाई मार्ग द्वारा अहमदाबाद या बड़ौदा होकर रेल या बस से गोधरा जाना संभव है।

इस महाशिविर में व्यवस्था हेतु आयोजकों द्वारा शिविर शुल्क ३०१)रु० रखा गया है, जिसमें ठहरने, रहने, एवं भोजन की व्यवस्था शामिल है, शिविर में पहुंचने पर धनराशि आयोजकों के पास जमा करवा कर रसीद अवश्य प्राप्त कर लें। ★

रजि० नं० : ३५३०५/८१ पोस्टल एल०आर०जे० : ३६६७/८६-८७

॥ सिद्धि साध्ये सतामस्तु ॥

सिद्धियों को पूर्णता के साथ प्राप्त करना ही जीवन है।

साधकों के मन में महकते हुए वसन्त पर्व पर

नवरात्रि–महोत्सव

(४ अप्रैल से १० अप्रैल तक)

* जो दिन साधकों के लिए सोने की कलम से लिखे गये हैं और रातें संगीत की लय पर थिरकती हुई।

** जिन दिनों पूर्ण ऋषिमय बन कर आध्यात्मिकता की ऊंचाइयों को छूने का सफल प्रयास किया जाता है।

*** और प्राप्त किये जाते हैं साधना के वे रहस्यमय सूत्र, जो ब्रह्माण्ड में और कहीं से भी प्राप्त करना संभव नहीं है।

**** गुरुदेव का सान्निध्य, यज्ञ में मन्त्रोच्चार प्रत्येक क्षण जीवन्त जाग्रत चैतन्य।

***** साधना के दीवाने प्रतीक्षा कर रहे हैं, साधना के दीवानों की, इस दीवानी नगरी में।

वर्ष का एक श्रेष्ठ एवं स्मरणीय पर्व

जो दिलों की धड़कन है,

जो प्राणों की चेतना है, जो जीवन का संगीत है

प्रतीक्षा कर रहे हैं आप सबकी

बांहें फैलाये

सिद्धाश्रम साधक परिवार

जोधपुर